OM - 4 - 2020 MAHARASHTRA FINAL_Page 1 and 2 16/05/2020 4:33 PM Page 1

ओमशान्ति मीडिया

मूल्यनिष्ठ समाज की रचना के लिए समर्पित

वर्ष -22 अंक -4 मई -II-2020 (पाक्षिक) माउण्ट आबू Rs. 8.50

मोहाली में दिव्य, अलौकिक व भव्य समारोह का आयोजन

- मानवीय मूल्यों की रक्षा हेतु 5 ब्रह्माकुमारियों ने किया प्रभु समर्पण राजयोगिनी दादी डॉ. रतन मोहिनी ने दिये वरदान
- हरियाणा विधान सभा के स्पीकर व पंजाब के उद्योग मंत्री ने दी शुभ कामनाएं

कार्यक्रम में सम्बोधित करते हुए राजयोगिनी दादी रतनमोहिनी तथा साथ मंचासीन हैं ब्र.कु. अमीरचंद, सुन्दर श्याम अरोड़ा,पंजाब उद्योग मंत्री, स्पीकर ज्ञान चंद गुप्ता।

- पांच कन्याओं ने किया ईश्वरीय सेवा में अपना आजीवन समर्पण
- समारोह में विधानसभा के स्पीकर सहित शहर के संस्थान के गणमान्य प्रतिनिधि व नागरिक उपस्थित रहे
- समारोह के दौरान रंगारंग संस्कृति कार्यक्रम का अलौकिक व दिव्य आयोजन
- इस अलौकिक समर्पण ने सबके दिलों को छू लिया

मोहाली। ब्रह्माकुमारीज़ सुख शान्ति भवन फेज़ 7 में एक भव्य, दिव्य व अलौकिक समारोह में 5 कन्याओं ने अपना जीवन प्रभु-समर्पण किया। इस अवसर पर माउण्ट आबू से ब्रह्माकुमारी संस्था की अतिरिक्त मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी दादी डॉ. रतनमोहिनी विशेष रूप से उपस्थित रहीं। सभी समर्पित हुई कन्याओं के माता-पिता व सम्बन्धी समारोह में उपस्थित रहे। सभी के अभिभावकों ने इन त्यागी, तपस्विनी, राजयोगिनी बहनों को समाज सेवा में अपना तन, मन, धन व कर्म पूर्णतः लगाने की सहर्ष सहमति दी। इस अवसर पर राजयोगिनी दादी डॉ. रतन मोहिनी ने अपने आशीर्वचनों में इन कन्याओं को देवी स्वरूपा, श्रेष्ठ चरित्रवान, साहसी व उत्साही बताया और उन्हें निःस्वार्थ सेवा द्वारा सर्व की दुआएं प्राप्त करने का वरदान दिया। कन्याओं ने अपना वर परमात्मा शिव को मानते हुए शिवलिंग पर पुष्प माला अर्पित की। ब्रह्माकुमारीज़ के पंजाब, हरियाणा, हिमाचल, जम्मू व कश्मीर, उत्तराखण्ड तथा चंडीगढ़ के निर्देशक राजयोगी ब्र.कु. अमीर चंद ने कहा कि आज मान्यताओं और विश्वास तथा वाणी और कर्मों में अंतर आ गया है। आध्यात्मिकता सबके जीवन में समानता लाना सिखाती है। उन्होंने आगे कहा कि बाहर की गंदगी को दूर करने के साथ-साथ अपने अंदर की गंदगी अर्थात् बुराईयों को खत्म करो। ब्रह्माकुमारीज़ कोई धर्म नहीं है बल्कि अपनी पुरातन आदि सनातन देवी देवता धर्म की संस्कृति है। और उससे पोषित करने के लिए आध्यात्मिकता ही एकमात्र सक्षम हथियार बताया। हरियाणा विधान सभा के स्पीकर ज्ञान चंद गुप्ता व पंजाब के उद्योग मंत्री सुन्दर श्याम अरोड़ा ने भी अपनी मंगल कामनाएं दी। नगर के अनेक गणमान्य व्यक्तियों व संस्थाओं ने इस अवसर पर राजयोगिनी दादी डॉ. रतन मोहिनी को गुलदस्ते, शॉल अभिनन्दन पत्र व मोमेन्टो आदि भेंट कर सम्मानित किया। जिनमें ज्ञान चंद गुप्ता, सुन्दर श्याम अरोड़ा,उद्योग मंत्री पंजाब, अमरजीत सिंह संदोआ,विधायक रोपड़, पूर्व मंत्री जगमोहन सिंह कंग, बीबी परमजीत कौर लंद्रान, मोहाली इंडस्ट्रीज एसोसिएशन के प्रधान योगेश सागर, गैरी आर्ट मोहाली की प्रम्बन्ध निर्देशिका गगनदीप कौर गैरी, रोटरी क्लब के प्रधान के.के. सेठ, रोपड़ के.ए. रिजाट के मालिक कमलशील, पंजाब सत्कर्ता ब्यूरो के डिप्टी कलेक्टर ए.के.सैनी आदि शामिल थे।

क्षेत्रीय निर्देशिका राजयोगिनी ब्र.कु. प्रेमलता ने सभी का स्वागत किया।

» 32 महिलाओं को किया सम्मानित

कोटा-राजस्थान। ब्रह्माकुमारीज़ के द्वारा शक्तिसरोवर के प्रांगन में महिला दिवस का कार्यक्रम बड़े ही धूमधाम के साथ मनाया गया। जिसके तहत 32 महिलाओं, जिसमें समाज सेवी से लेकर अन्य धर्मों एवं वर्गों की महिलाओं का सम्मान किया गया। इन महिलाओं के सम्मान में ब्र.कु. ज्योति ने नारी की वस्तुतः स्थिति का वर्णन करते हुए उन्हें आगे बढ़ने की प्रेरणा दी। आशा महेश्वरी,आल इंडिया महेश्वरी समाज की अध्यक्षा ने कहा कि सशक्त महिला सुसभ्य समाज का निर्माण करने में महत्वपूर्ण भूमिका अदा करती है। और ये अध्यात्म को अपने जीवन में उतारने से ही सम्भव हो सकता है। तर्नुन नाज मुस्लिम समाज,आल इंडिया रेडियो और ओनर ऑफ सुपर मार्केट ने बताया कि महिला हर वक्त, हर पल बहुत महत्वपूर्ण होती है, महिला ही पूरे समाज को पूरे परिवार को आबाद करती है। आज तक बेटियों ने जो दर्द माँ-बाप का, परिवार का समझा है विश्व में आज तक किसी ने भी नहीं समझा।

सुशीला जोशी ने कहा कि साहस और शौर्य से भरी है नारी, आकाश विराटता को समेटे हुए है नारी, नारी सौम्या है, माधुर्य है, शील बनती है, कलावती है नारी। क्षेत्रीय निर्देशिका ब्र.कु. उर्मिला ने कहा कि हर एक महिला संघर्ष करके ही आज यहाँ तक पहुँची है, क्योंकि भारत देश जिसे माँ की उपमा दी गयी है उसे भारत माता कहकर पुकारा जाता है। वो कोई एक की बात नहीं है, हम सभी नारियां ही वो माँ हैं जो पूरे विश्व का कल्याण कर भारत माँ कहलाती हैं। कार्यक्रम में शहर के अन्य विभिन्न संस्थान की प्रतिष्ठित महिलायें भी शामिल रहीं।

पुलिस एवं मेडिकल विभाग को किया सम्मानित

सादुलपुर-राज.। लॉकडाउन के दौरान पुलिसकर्मी एवं डॉक्टर्स के मनोबल को बढ़ाने व सम्मान हेतु ब्रह्माकुमारीज़ सेवाकेन्द्र की ओर से ब्र.कु. शोभा ने थाना अधिकारी विष्णुदत्त विश्नोई व स्टाफ और रोहिला नर्सिंग होम, जैन अस्पताल, सोनी नर्सिंग होम, राजकीय सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र, राजकीय प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र, राजकीय आयुर्वेदिक धनवंतरी औषधालय में 250 कोरोना योद्धाओं को ईश्वरीय सौगात, प्रसाद, ईश्वरीय साहित्य, मास्क व टॉवल आदि वितरित किए।

♦ जिस देश में महिला सम्मानित-वही देश सुरक्षित

अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस पर महिलाओं के लिए विशेष कार्यक्रम

नवसारी-गुज.। अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस पर सेवाकेंद्र द्वारा 'महिला सशक्तिकरण द्वारा सामाजिक परिवर्तन' कार्यक्रम का आयोजन किया गया। ब्र.कु. भानु ने सभी का स्वागत किया और ब्रह्माकुमारीज़ विद्यालय का संक्षिप्त परिचय कराते हुए कहा कि निराकार परमपिता परमात्मा शिव ने प्रजापिता ब्रह्मा के साकार माध्यम द्वारा सन् 1937 में संस्था की स्थापना की। एक समय था जब नर-नारी दोनों का समाज में समान दर्जा था, जिसे सतयुग कहा जाता था। अभी परमात्मा आकर आत्मिक ज्ञान देकर, राजयोग द्वारा आत्मा में निहित दैवी गुणों को जागृत कराते हैं तथा नई सतयुगी स्वर्गिक दुनिया की स्थापना कराते हैं। संस्था के अनेक प्रभागों की जानकारी देते हुए उन्होंने महिलाओं के सर्वांगीण विकास के लिए सेवारत महिला प्रभाग की सेवाओं से भी अवगत कराया। राजयोगिनी ब्र.कु. गीता दीदी ने कहा कि किसी भी राष्ट्र की महानता उस राष्ट्र के लोगों के चरित्र पर आधारित है। चरित्रवान समाज निर्माण करने में नारी का बहुमूल्य योगदान है। जिस देश में नारी का सम्मान है, वही देश सुरक्षित है। कार्यक्रम के मध्य में गीता दीदी ने राजयोग मेडिटेशन के विषय को स्पष्ट कर प्रैक्टिकल मेडिटेशन कराकर गहन शांति की अनुभूति कराई। माधवी कर्वे,सोशल वर्कर ने कहा कि महिलाओं को घर चलाने की निपुणता हासिल है। ये परिवार को एकसूत्र में बांधे रखने की कला को बखूबी निभाती है। ऋषिदा ठाकोर,तपस्या नारी सेवा संस्थान की प्रमुख ने कहा कि जैसे खाना-पीना ज़रूरी है वैसे ही ईश्वरीय ज्ञान भी जीवन में ज़रूरी है। ईश्वर हमें जो संकेत देते हैं उस पर हमें चलना चाहिए। अपना समय अच्छे कार्य में लगाना चाहिए। जसवंती पटेल,प्रगति महिला मंडल की प्रमुख ने भी अपने विचार व्यक्त किए।

कार्यक्रम में अतिथि के रूप में आशा शाह सोशल वर्कर, प्रिन्सीपल तथा अन्य सोशल वर्कर जैसे- मीना भास्कर पटेल, लक्ष्मी पटेल, नर्मदा पटेल, अरुणा पटेल, एमी पटेल सहित शहर की प्रतिष्ठित महिलायें उपस्थित रहीं।

'कोरोना' अपन को सही करो ना...!!!

भागदौड़ भरी ज़िन्दगी में मनुष्य दौड़ता ही जा रहा है, बस दौड़ता ही जा रहा है। कोई अपने लिए तो कोई अपनों के लिए। **कई इसी सोच से अपनी गाड़ी को तेज़ तरार दौड़ाता** एक बड़ी अच्छी कार ले लूँ, अच्छा-सा मकान ले लूँ, अच्छी नौकरी तलाश ली जाए, तो कोई घर परिवार को चलाने का जुगाड हो जाये, बस...। इसी में ही दौड़ रहा है। अचानक फिर लॉकडाउन हो गया। सब अपने-अपने घर में कैद हो गये। ऐसे वक्त में कईयों को अपने घर में, अपनों के साथ रहने में भी बोरियत-सी रहने लगी। पर करें भी तो क्या? बाहर जायेंगे तो अज्ञात शत्रु कोरोना का डर, न वो दिखाई देता है और ना सुनाई पड़ता है। बस किसी को भी टच करें या छू लें तो अपने जाल में फंसा लेता है और नाक पकड़ कर गला घोट देता है। ऐसे में बस... उपाय दिखाया है तो सिर्फ और सिर्फ स्वयं को दूसरों से दूरी बनाए रखना का। पर वह भी तो कठिन-सा लगता है। मजबूरी से ही सही जैसे-तैसे पालन तो करना ही पड़ेगा अन्यथा उसकी गिरफ्त से बचना मुश्किल। ऐसे वक्त पर दो तरह की श्रेणी के लोग दिखाई पड़ते हैं। एक वर्ग है जो अचानक आई चुनौतियों ने मन का चैन चुरा लिया। दूसरा वर्ग है जो हुआ बहुत अच्छा हुआ। इस सकारात्मक विचार को लिए हुए हैं।

\- ब्र. कु. गंगाधर

पहले वर्ग के लोगों की तादाद बहुत ज़्यादा है जो सोचते हैं कि कैसे कटेंगे घर में दिन? कैसे रह पायेंगे 21 दिन तक? बाहर की ना हवा, ना दोस्त, ना अपने साथी, ना ही अपना दफ्तर ये सभी वैरायटी से हम वंचित हो गए। बड़ा मुश्किल लगता है इस घर की गिरफ्त में रहना। पर जायें तो जायें कहाँ! बाहर जायें तो फिर वही डर। क्योंकि वो अपने माया जाल में फंसा लेगा, बस...! अपना ही घर जेल जैसा प्रतीत होने लगा। होगा भी क्यों ना! क्योंकि इस तरह का तो कभी मन ने सोचा ही नहीं था, अचानक हो गया। और कोई चारा रहा नहीं, वहीं पर रहने को विवश हो गए।

दूसरा वर्ग- जो हुआ सो अच्छा हुआ। इसी सकारात्मक सोच वालों ने उन शिकायतों को दूर किया जो हमेशा घर से शिकायत बनी रहती थी कि आपके पास तो घर के लिए टाइम ही कहाँ है। उन्होंने इस तरह समझा कि अब ये मौका आया है अपने और अपनों के साथ रहने का, कुछ उनका भी सुन लिया जाये। इस लॉकडाउन का फायदा ले लिया जाये।

कईयों ने इस चुनौति को अवसर समझा। और घर में रहकर भी एक नये ढंग से, एक नई सोच को क्रियेट किया। और मिले हुए इस सु-अवसर को नये अंदाज से अपने आपको देखा तो पाया कि ज़िन्दगी की रफ्तार में खुद से ही दूर हो गये। ज़िन्दगी जा कहाँ रही है? आखिर में ज़िन्दगी को कहाँ पहुँचाना चाहता हूँ? देखा, तो जो भी जी रहा हूँ उसपे कितने सारे बोझ लादकर दौड़ रहा हूँ। जिसे सोचने पर पता चला कि ये जो लदे हुए बोझ हैं इनका ज़िन्दगी से कोई लेना देना ही नहीं है।

देखा तो पता चला कि सुबह उठने से वापसी घर आने तक मन के अन्दर इतने सारे बोझ लद जाते हैं जिससे थकान, तनाव व घुटन-सी फील होती है। और देखा कि मन में कईयों के प्रति ईर्ष्या, नफरत, कटुता, प्रतिस्पर्धा के काले धब्बे लगे हुए हैं। जो ज़िन्दगी को बोझिल करते हैं। सम्बन्धों में ऐसे जाले लगे हुए हैं जो सम्बन्धों की मिठास से वंचित कर रहे हैं। शांति का दीया तो जैसे बुझ ही गया है। सच्चे प्रेम की जगह को शुगर कॉटेड प्रेम ने ले लिया है। जहाँ अन्ततः दुख ही हाथ लगता है।

इन सबको ठीक करने के लिए मन में सुन्दर विचार आया कि इन सब काले धब्बों और जालों को हटा लिया जाये तो! तो सोचिए कैसा होगा जीवन! फिर विचार की परत पर परत खुलने लगी। और विचार आया कि अगर हटाया जाये तो कैसे? सोचा, बात वहीं आकर रूक गई अरे! मन से सुख, मन से दुख, बस बात पकड़ में आ गई। जब मन मेरा है इस विचार ने तो जैसे और नये राज़ खोल दिए। मेरा मन पर मेरा ही नहीं। मेरे मन पर अधिकार किसका है? जो सुकून को छिन रहा है। देखा व सोचा किस-किस ने उस पर कब्जा किया है। मेरा है तो मैं जैसे चाहूँ उसे चला सकता हूँ लेकिन इस पर प्रभुत्व किसका हो गया है? ये तो ऐसे हुआ जैसे कि अपनी प्रॉपर्टी पर किसी दूसरे ने अपना मकान बनाकर अपनी धाक जमा ली हो! उसे कौन यूज़ कर रहा है ज़रा देख लिया जाये..। बस यूंहि विचार अन्दर आते रहे तो फिर नया विचार आया कि मन की शांति। फिर नया संकल्प उठा कि मन को अशांत कौन कर रहा है? शांति कौन छिन रहा है ज़रा देख लिया जाये। भीतर कुतरने पर पता चला कि माइंड इज़ पॉवर, मन की शक्ति, मन की ऊर्जा, ये तो मेरी शक्ति हुई ना! मन की शांति कौन भंग कर रहा है, मन में हलचल किस वजह से हो रही है, ये देखा तो बड़ी लिस्ट मन रूपी आँखों के सामने आ गई। हमारे ये सारे मन के सुख, शांति, चैन व सुकून कौन छिन रहा है ये समझ में आया। हमने उन विचारों की लिस्ट को तीन कैटेगरी में अलग-अलग छांटा तो पता चला कि वो ये है पहला देह, दूसरा सम्बन्ध, तीसरा धन।

पहला देह - देह मेरी है तो मेरा उस पर अधिकार है। तो मैं इस निष्कर्ष पर पहुँचा कि मैं शक्तिशाली आत्मा हूँ, बस मुझे इस शक्ति से देह को सम्भालना है, ना कि देह के पिछे इस शक्ति को व्यर्थ खर्च करना है।

दूसरा है - सम्बन्ध। सम्बन्धों में भी देखा कि कई ऐसी कटुता की दिवारें खड़ी नज़र आईं। जोकि मन को भारी करती हैं। मैंने उसको सोचा, समझा और सही मायने में सम्बन्ध क्या है उसको जीने का नज़रिया बनाया।

तीसरा धन - हम जिसे सुख का साधन समझते हैं वही हमारे दुख का कारण बना। बेशक धन जीवन जीने के लिए एक ज़रूरी साधन है पर इतना तवज्जू उसके पीछे दिया जिससे जीवन का संतुलन ही बिगड़ गया। ना शांति मिली, ना सुख।

अब उसे जीऊंगा और जीने दूँगा। नये संकल्प के साथ, नई शक्तियों के साथ फिर से वही ज़िन्दगी, पर जीने की सोच नई होगी, अंदाज नया होगा।

इस तरह हमने मन को सकारात्मक दिशा देकर लॉकडाउन में मिले समय से जीवन जीने के लहजे को ही परिवर्तित कर दिया। मेरी तो आँखें ही खुल गईं। परमात्मा से हमें जीवन जीने के लिए, जीवन में सुकून पाने के लिए इतना सारी कुदरती बखशीश प्राप्त है। तो आप भी ऐसी चुनौतियों को सु-अवसर में बदल कर सुकून को जीवन में लायें। तो आप ऐसा करेंगे ना! घबरायेंगे तो नहीं!

कर्म में मालिकपन की स्मृति द्वारा ही विदेही स्थिति का अनुभव सहज कर सकेंगे

दादी हृदयमोहिनी, मुख्य प्रशासिका

अगर खुद में ही नहीं होगा तो दूसरों को कैसे देगा? और लाइट हाउस की लाइट तो पावरफुल होती है। तो इतनी शक्तियाँ जमा करके, लाइट हाउस बनके वायुमण्डल को परिवर्तन करना है।

बाबा ने कहा है बच्चे लाइट हाउस बनो। तो लाइट हाउस का काम क्या होता है? चारों ओर रोशनी देना। इस समय दुनिया की सभी आत्माओं की यही इच्छा है कि सदा सुखी रहें, सदा शांत रहें। साधारण अशान्ति से शान्ति तो सब लोग समझते हैं लेकिन हम लोगों की स्थिति ऐसी होनी चाहिए जो मन नेगेटिव या व्यर्थ संकल्पों में भी नहीं जाये। इससे किनारा होगा तो हमारे बेस्ट, शुभ संकल्प होंगे। फिर उन समर्थ संकल्पों के वायब्रेशन स्वतः जाते हैं। बाबा जब आते हैं तो वायब्रेशन अच्छे लगते हैं, क्यों? क्योंकि वह सागर है। ज्ञान का, सब शक्तियों का सागर है, उसका वायुमण्डल चारों ओर फैल जाता है। तो ऐसे हम सबको भी लाइट हाउस होकर वायुमण्डल में फैलाना है। वह हद की रोशनी फैलाने वाला लाइट हाउस तो कॉमन है। लेकिन रूहानी लाइट हाउस वही बन सकता है जिसमें सब शक्तियों का स्टॉक हो। अगर खुद में ही नहीं होगा तो दूसरों को कैसे देगा? और लाइट हाउस की लाइट तो पावरफुल होती है। तो इतनी शक्तियाँ जमा करके, लाइट हाउस बनके वायुमण्डल को परिवर्तन करना है। विश्व परिवर्तन की बहुत बड़ी जिम्मेवारी है। तो बाबा ने यह जो जिम्मेवारी दी है, वह हमको अवश्य निभानी चाहिए। कई समझते हैं हम तो बहुत बिज़ी रहते हैं इसलिए पावरफुल योग नहीं हो सकता है। विदेही बनना, अशरीरी बनना या कर्मातीत बनना - यह तो बहुत ऊंची मंज़िल है। इसके लिए अगर हम अभी से तैयारी करें तो लास्ट में हमको यह तैयारी मदद देगी। विदेही माना ये नहीं कि देह से एकदम न्यारा हो जायें फिर तो शरीर छूट जायेगा। विदेही का अर्थ ही है कि कोई भी देह की कर्मेन्द्रियाँ चाहे सुनने वाली, चाहे देखने वाली, चाहे सोचने वाली यह कोई भी मुख्य कर्मेन्द्रियाँ हमको देह भान में नहीं लाये अर्थात् देह की कोई भी कर्मेन्द्रियाँ हमको अपनी तरफ आकर्षित नहीं करें। वश में नहीं है तो कोई न कोई विशेष कर्मेन्द्रियाँ जो होती हैं वह खींचती हैं, तो हर एक को अपनी चेकिंग करनी चाहिए कि बहुत करके कौन-सी कर्मेन्द्रिय मेरे कन्ट्रोल में नहीं हैं। जो कन्ट्रोल में नहीं है वही अन्त में धोखा देगी। तो विदेही तब बन सकेंगे जब यह सब कर्मेन्द्रियाँ कन्ट्रोल में हों।

ज्ञानी तू आत्मा का पहला पहला गुण है - सहनशीलता

बाबा ने कहा बच्चे दुःख-सुख, स्तुति-निंदा, मान-अपमान सबमें समान रहने की, एकरस स्थिति में रहने की, सहनशील होने की शक्ति चाहिए।

बाबा हम बच्चों को यह बहुत बड़ा लेसन देते हैं कि हे बच्चे! इस ज्ञान की मंज़िल पर चलेंगे तो सहन करने की शक्ति धारण करनी पड़ेगी। सहनशील बनने की थोड़ी तकलीफ लेनी पड़ेगी। यह सहनशीलता का गुण बहुत बड़ी शक्ति है, यह सर्व गुणों में महान गुण है। यह बाबा का बोल सुन सब प्रैक्टिकल चार्ट देखें कि मेरे में सहनशीलता का गुण व शक्ति है? बाबा ने कहा बच्चे दुःख-सुख, स्तुति-निंदा, मान-अपमान सबमें समान रहने की, एकरस स्थिति में रहने की, सहनशील होने की शक्ति चाहिए। तो यह शक्ति चाहिए या मुझ आत्मा का अथवा इस ज्ञान का पहला-पहला गुण ही यह है। ज्ञानी तू आत्मा का गुण है - समान रहना। अगर ज्ञानी तू आत्मा में यह गुण नहीं तो वह प्रिय नहीं। जब हम अपने को ज्ञानी तू आत्मा कहते माना हमारे अन्दर ड्रामा की सारी नॉलेज है। हर आत्मा के सतोप्रधान, सतो, रजो, तमो की स्टेजस की भी नॉलेज है। जब नॉलेज है तो नॉलेज की शक्ति के आधार पर समान रहने की शक्ति स्वतः ही आ जाती है। जैसे बाल से युवा, युवा से वृद्ध होते तो कभी यह नहीं कहते कि ओ नेचर! तूने बाल से युवा व युवा से बूढ़ा क्यों बनाया? परन्तु जानते हैं यह प्रकृति का नियम है। चार ऋतुएं होना यह भी प्रकृति का नियम है। जब हम जानते हैं कि यह नियम है तो हम क्यों कहें ओ प्रकृति तुम हमें ठण्डी में व गर्मी में दुःख क्यों देती! हम जानते हैं कि ये नेचर का गुण है। सर्दी के समय सर्दी, गर्मी के समय गर्मी होनी ही है। हमारे पास उससे बचने के साधन हैं तो उसे यूज़ करें। हम जान गये कि अभी तो प्रकृति है ही तमोप्रधान। सतयुग में प्रकृति सतोप्रधान है इसलिए सुखदाई है।

दादी प्रकाशमणि, पूर्व मुख्य प्रशासिका

फिर जब कहते क्या करें यह पारिवारिक परिस्थितियां आती हैं। वह तो आयेंगी ही। उससे दुःखी क्यों हूँ! जैसे प्रकृति का दुःख, सुख सहन करते, वैसे यह परिवार का भी तो हिसाब-किताब है। मैं उसमें क्यों लडूं! हमें उसमें अपनी स्थिति अप-डाउन नहीं करनी है। कभी-कभी सोचते मुझे तो सबसे मान मिलना चाहिए। ये मुझे मान नहीं देता इसलिए गुस्सा आता। लेकिन जब प्रकृति दुःख देती है तो गुस्सा क्यों नहीं आता। जब मेरा कोई अपमान करता तो मैं रंज होती लेकिन मैं सोचूँ कि मैंने उसे कितना मान दिया है। एक है देना, एक है लेना। जब अपमान पर गुस्सा आता माना मैं मान की भूखी, प्यासी हूँ। मान की मांग है। मैं दाता बनूं या लेवता बनूं? मुझे मान देना है या लेना है? मैं वरदाता हूँ या आत्माओं से वर लेने वाली हूँ? मान मांगना अर्थात् आत्माओं से वर मांगना। बाबा कहता मांगने से मरना भला...मैं दाता की बच्ची दाता हूँ तो लेवता क्यों बनते! यह सवाल हरेक अपने से पूछे। हरेक अपने से पूछे - पहले मेरी स्तुति मेरे 10 मंत्री (कर्मेन्द्रियां) करते? जो मुझ आत्मा का संस्कार है वह संस्कार मेरी स्तुति करता? जब मेरा संस्कार मेरी स्तुति करे अर्थात् ऑर्डर में रहे तब दूसरे भी स्तुति करेंगे।

सिम्पल रहकर सैम्पल बनने के साथ तपस्वीमूर्त बनो

दादी जानकी, पूर्व मुख्य प्रशासिका

प्यारे बाबा ने हमको अपने ही जैसा तपस्वी मूर्त बनाकर खूबसूरत बना दिया। मुरली में बाबा ने कितना बारी कहते बच्चे मेरे को याद करो। ब्रह्मा बाबा ने हम बच्चों को अपने जैसा तपस्वी मूर्त बनाया। बाबा ने कहा योग अग्नि है तभी तो योग से विकर्म विनाश होते हैं, योग ऐसा लगाओ जो रहे हुए सब विकर्म विनाश हो जाएं। योग अग्नि भी है तो योग शीतल और मीठा भी बनाता है। कभी यह ख्याल नहीं आता है कि हमारे पास यह कमी है, नहीं सब कुछ है।

एक बुक लण्डन में तैयार कर रहे हैं "मुझे मरना है तो कैसे, जीना है तो कैसे?", यह मेरी भावना थी बहुत समय से। यह मरजीवा लाइफ है, इसमें एक मरने का और एक जीने का फोटो भी डाला है। तो हमें बाबा को एक्यूरेट कॉपी करना है। जो भी लिखत होती है उसके ऊपर लिखते कॉपीराइट। यह जो बुक है मरने का और जीने का, इसकी भले कॉपी करो, मना नहीं है। तो

जब कभी मैं पाण्डव भवन में होती हूँ तो वह अनुभव याद आने लगता है और मेरे साथ जो विदेशी बहन-भाई होते हैं मैं उनको कहती हूँ गद्दी पर बैठ करके यह भासना ले लो।

कोई ऐसा मरने का पुरुषार्थ करता है? मैं सदा ही यह प्रैक्टिस करती हूँ। एक बारी बाबा अपने कमरे में गद्दी पर बैठा था, सामने मैं बैठी थी, बाबा बहुत अच्छा लग रहा था।

ऐसा अच्छा लग रहा था जो वहाँ से हटने को भी जी नहीं चाहता था। दीदी ने कहा बाहर बहुत खड़े हैं। तो बाबा ने कहा बच्ची, ठहरो अभी सत्यनारायण की कथा चल रही है। उस घड़ी ऐसी भासना आई जैसे मैं सत्य नारायण स्वामी के सामने बैठी हूँ। फिर कहा यहाँ बाजू में आकर बैठो। बाजू में बिठाकर ऐसी करेन्ट आई जिसने अशरीरी बना दिया। तो जब कभी मैं पाण्डव भवन में होती हूँ तो वह अनुभव याद आने लगता है और मेरे साथ जो विदेशी बहन-भाई होते हैं मैं उनको कहती हूँ गद्दी पर बैठ करके यह भासना ले लो। तो यह जो पुरुषार्थ है, शरीर में रहते भी अशरीरी रहना और ट्रस्टी रहना यानी सिम्पल रह करके सैम्पल रहो, दूसरी तरफ कहता है तपस्वी रहो। फिर अव्यक्त रहो क्योंकि और कोई काम है ही नहीं, जहाँ भी पाँव रखो तो पाँव धरती पर नहीं हैं। सेवा भले करो पर तपस्या भी करो। याद में रहना है तो कैसे रहना है! हमारा योग ऐसा हो जो और कोई बात याद न आये। सवेरे की बात शाम को याद नहीं। ऐसा योगयुक्त रहना है जो कोई भी बाजू में बैठे तो खुश होके जाये।

यह टाइम बहुत अच्छा है, आपस में मिलके रहना और बाबा की यादों में रहना। जितना हम आपस में मिल करके रहते हैं तो मुस्कराते हैं। कभी-कभी कोई-कोई देशों में हम कहती एक दो को सामने ऐसे देखो और मुस्कराओ, इससे बहुत फायदा हुआ है। पहले मुस्कराना सहज है उसके लिए सब काम सहज हो जाते हैं। मैं बाबा के सामने हार्मोनियम बजाते गीत गाती थी तो बाबा खुशी में मुस्कराता था। हारमनी माना हार मानी झगड़ा टूटा, सेवा में कभी ज़िद्द और सिद्ध नहीं।

OM - 4 - 2020 MAHARASHTRA FINAL_Page 1 and 2 16/05/2020 4:33 PM Page 3

पिंपरी-चिंचवड़(महा.)। महानगरपालिका की ओर से ब्रह्माकुमारीज़ की अतिरिक्त मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी दादी रतनमोहिनी को सम्मान पत्र देकर सम्मानित करते हुए विधायक लक्ष्मण जगताप, महापौर उषा ढोरे, नगरसेवक संदीप वाघेरे, संतोष कोकणे, उषा काले, नीता पाडले, डी.वाय.पाटील,सी.ई.ओ., ब्रिगेडियर डॉक्टर अमरजीत सिंह, पूर्व विधायक गौतम चाबुक्सवार, सी.आई.ए. के चेयरमैन मोतीलाल सांकला, असिस्टेंट कमिश्नर किरण खोब्रेकर, ब्र.कु. पारू, ब्र.कु. उर्मिला, ब्र.कु. उषा, स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. सुरेखा तथा अन्य गणमान्य लोग।

अन्धेरा दूर करती आशा की एक किरण

मौत ने तो धर दबोचा एक चीते की तरह, जिंदगी ने जब छुआ तो फासला रख कर छुआ - दुष्यंत

हर रास्ता अनजान-सा, हर सफलता नादान-सी सदियों पुरानी है मगर हर दिन नई है जिन्दगी - निदा फ़ज़ली

ज़िंदगी के साथ सफलता और विफलता दोनों जुड़ी हुई हैं। ऐसे कम ही होता है कि हम जिस काम में हाथ डालें वो बिना किसी बाधा के शत-प्रतिशत पूरा हो जाए अथवा सारे ही काम पूरी तरह बिगड़ जाएँ। अगर हमारे असफल होने का प्रतिशत पचास से काफी ऊपर पहुँचा हुआ है तो हमें ठण्डे दिमाग से अपनी विफलताओं के कारण, अपने अन्दर ही ढूँढ़ने पड़ेंगे। ऐसा न करने पर बार-बार की विफलता हमें कुंठित बना सकती है। कुंठा हमारे मन में उलझी हुई एक ऐसी गाँठ है जो हमारे विचारों और व्यवहार को अपने अन्दर जकड़ लेती है और हम सही और स्वतंत्र चिन्तन के काबिल ही नहीं रह पाते।

प्रेम में धोखा खाए हुए लोग प्रेमियों की मूर्खताओं पर हँसते हैं और कंजूस लोग उदारता से खर्च करने वाले लोगों को दिखावा पसन्द या पाखण्डी सिद्ध करते हैं। ज़िन्दगी की दौड़ में पिछ्ड़े हुए व्यक्ति कामयाब लोगों को चापलूस और बेईमान बताते हैं। दाम्पत्य में दुःखी लोग प्रेमी पतियों को जोरू का गुलाम बताते हैं और आलसी लोग मेहनती व्यक्तियों को लालची साबित करते नहीं थकते।

कुंठित लोग सब जगह अन्धकार और निराशा फैला देते हैं। न इन्हें अपनी उपलब्धियों से खुशी होती है और न इनसे दूसरों की सफलता सहन होती है। मेरे पड़ोसी को एक लाख रूपये की लॉटरी मिल गई। महाशय को पैसे की सख्त ज़रूरत भी थी। मैंने जाकर बधाई दी तो उदास भाव से जवाब दिया, "हमारे पास क्या बचने वाला है? आधा पैसा तो सरकार आयकर में जमा कर लेगी।" इसके बाद बीस मिनट तक श्रीमान् का भाषण सरकार की कर-नीति के खिलाफ चलता रहा।

कुंठित आदमी रोशनी में भी अन्धेरा ढूंढ ही लेता है। उसे खूबसूरती में भी कुरूपता ढूँढ लेने की विशेष महारत प्राप्त होती है। वह कमियाँ और खराबियाँ देखने के लिए पैनी नज़र रखता है। उसे किसी की भी शराफत पर भरोसा नहीं होता।

आशावादी को खुशी है कि ज़िंदगी कितनी मज़ेदार चीज़ है लेकिन निराशावादी को अफसोस है कि एक दिन मरना पड़ेगा। आशावादी को अच्छा लग रहा है कि बादल छँट गए हैं और धूप निकल आई है लेकिन निराशावादी को चिन्ता है कि आज गर्मी रहेगी। पदोन्नति हो जाने पर भी निराशावादी सोचता है कि अब ज़िम्मेदारियों का भार बढ़ गया है, न होने पर तो वह पक्षपात और भाई-भतीजेवाद को कोसता ही है। फसल बुरी हुई तो उसे भय है कि परिवार का खर्चा कैसे चलेगा, अच्छी फसल हुई तो चिन्ता है कि ज़्यादा उत्पादन के कारण इस बार भाव गिर जाएँगे। सूखा होने पर अकाल की दुश्चिंता और बारिश हो जाने पर कीचड़ और मच्छरों की समस्या उसे चैन नहीं लेने देती। बचपन की निर्भरता से छुटकारा पाकर वह आज़ाद युवावस्था में पहुँचना चाहता है मगर जवान होने पर उसे बचपन की मस्ती खो जाने का गम है। कुल मिलाकर हताशा से कुंठित व्यक्ति प्रसन्नता और सुख का जानी दुश्मन होता है। उसे यह पता नहीं होता कि वह चाहता क्या है। वह तो यही जानता है कि वह सन्तुष्ट नहीं है। अच्छाई उसे कहीं दिखाई नहीं पड़ती और बुराई देखने से वह कभी चूकता नहीं है।

निराशा से कुंठित व्यक्तियों को सबसे ज़्यादा खुशी तब होती है जब कोई आदमी अपने ध्येय को प्राप्त करने में विफल हो जाता है। तब वे दौड़कर उसके पास जाते हैं और कहते हैं - मैंने तो तुम्हें पहले ही कहा था कि क्यों भागदौड़ करते हो भैया, यह दुनिया ही नालायकों से भरी पड़ी है। यहाँ मक्कार और बदमाश ही कामयाब होते हैं। मेरे-तुम्हारे जैसे लोगों के लिए यहाँ जगह ही नहीं है।

जाने-माने बुद्धिजीवी लोग अपनी सुविधाभोगी ज़िंदगी के अलावा किसी भी बात से नहीं जुड़े होते। यही कारण है कि दूर खड़े दर्शक की तरह वे सिर्फ विश्लेषण और आलोचना ही करते हैं और यह भ्रम पालते रहते हैं कि वे विचारक हैं। ठीक इसी प्रकार "सिनिक" भी न्यायाधीश की तरह इस संसार की कमियों और खराबियों की जाँच-पड़ताल करते रहते हैं लेकिन इन्हें ठीक करने में उनकी कोई रूची नहीं होती।

ऐसे निराशावादी मानव - द्वेषियों से लोग नफरत करते हैं। उदासी और दुःख फैलाने वालों से सभी दूर भागते हैं क्योंकि हर आदमी की ज़िंदगी में पहले से ही काफी पेरशानियाँ मौजूद हैं। लोगों को उत्साहपूर्ण और आशावादी व्यक्ति ही अच्छा लगता है। हर कोई प्रोत्साहन चाहता है। हर एक चाहता है कि कोई उसकी हिम्मत बढ़ाए, उसका हौंसला-अफज़ाई करे। इसलिए अनिष्ट के सन्देशवाहक न बनिए। हो सके तो अपने साथियों को निराशा और गमों से राहत दिलाने के लिए उनकी हिम्मत बढ़ाएँ।

आशा का संचार हो जाने पर रोगी भी जल्दी ठीक होने लगता है। डॉक्टरों के मतानुसार जिन रोगियों में स्वस्थ होने की इच्छाशक्ति समाप्त हो गई है उन्हें सिर्फ दवा के बल पर ठीक नहीं किया जा सकता। दूसरों में उत्साह और आशा जागृत करने से आप पाएँगे कि अनजाने में ही आपकी हताशाएँ भी गायब हो गई हैं।

जो आदमी जितनी आलोचना करता है, वह रचनात्मक कार्यों से उतना ही दूर रहता है। किसी व्यक्ति से या विचारधारा से जब तक आपका सरोकार नहीं होता तब तक उसे ठीक करने या सुधारने का प्रयास आप नहीं करते। सरोकार न होने पर आप उसके बारे में सिर्फ आलोचनात्मक टिप्पणियाँ ही कर सकते हैं।

मन को निराशा के गहरे अन्धकूप से बाहर निकालकर ताज़ा रोशनी और हवा में लाने के लिए निम्नलिखित बातों पर ध्यान दिया जाना चाहिए -

पुरानी असफलताओं और पछतावों से मत चिपके रहिए। आपका मन अतीत की दुःखदाई स्मृतियों का म्यूजियम नहीं है। याद रखिए कि संयोगवश कई बार योजनाबद्ध और कुशलतापूर्वक किए काम भी बिगड़ जाते हैं। आप भी कई कार्यों में असफल हो गए होंगे। सिकन्दर, नेपोलियन, लिंकन और गांधी जी भी कई कार्यों में विफल रहे थे। हर कार्यकर्ता विफलता को मानकर चलता है। हाँ, जो आदमी कुछ करेगा ही नहीं वह तो असफल भी कैसे होगा?

अपनी तुलना दूसरों से मत करते रहिए। ऐसा करना निराशा को ही जन्म देता है क्योंकि हम सम्पूर्ण तुलना न करके एकपक्षीय तुलना करते हैं। राघव व्यापार में आपसे आगे बढ़ गया मगर उसका दाम्पत्य दुःखी है और बच्चे बिगड़ गए हैं क्योंकि वह चौबीस घण्टे ही व्यस्त रहा है। आप सिर्फ व्यापारिक स्थिति की तुलना ही कर लेते हैं और स्वयं को पिछड़ा महसूस करते हैं। अपने पारिवारिक सुख की भी तो उससे तुलना कीजिए।

धनपुरा-घाट (गुज.)। 84वीं त्रिमूर्ति शिवजयंती पर आयोजित कार्यक्रम में शिवलिंग के दर्शन के पश्चात् चित्र में विधायक रमन भाई, डायरेक्टर राजू भाई, ब्र.कु. तारा तथा अन्य।

राजनांदगांव-छ.ग.। नवनिर्वाचित महापौर, नगर निगम अध्यक्ष एवं पार्षदों के अभिनंदन समारोह में दीप प्रज्वलित करते हुए महापौर हेमा देशमुख, अध्यक्ष हरिनारायण धकेता, पूर्व महापौर शोभा सोनी, ब्र.कु. रोहित,ज्ञान सरोवर,माउण्ट आबू तथा सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. पुष्पा।

सारंगपुर-म.प्र.। महाशिवरात्रि पर आयोजित कार्यक्रम का शुभारम्भ करते हुए अपर जिला न्यायाधीश हिमांशु शर्मा, वरिष्ठ अधिवक्ता ओपी विजय वर्गीय, समाज सेवी मांगी लाल सोलंकी, ब्र.कु. भाग्यलक्ष्मी, अनिल गुप्ता तथा अन्य।

वरसोवा-मुम्बई। ज्ञान चर्चा के पश्चात् रंजीत बरोट,इंडियन फिल्म स्कोर कम्पोसर को प्रसाद भेंट करते हुए ब्र.कु. पूनम।

बेंगलुरु-कुमारा पार्क। अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस पर आयोजित कार्यक्रम में दीप प्रज्वलन के पश्चात् ईश्वरीय स्मृति में बायें से ब्र.कु. तुलसी, श्रीमति राजेश्वरी बनजगोल,पी.एस.आई.,सेशाद्रिपुरम पुलिस स्टेशन, ब्र.कु. सुरेन्द्रन,रिजनल कोऑर्डिनेटर,एजुकेशन विंग,ब्रह्माकुमारीज़,मा.आबू, डॉ. मोहिनी प्रसाद,हेड ऑफ डिपार्टमेंट,ओबीजी,अपोलो हॉस्पिटल्स,बेंगलुरु, ब्र.कु. सरोज दीदी,उपक्षेत्रीय निदेशिका, श्रीमति गीता,लेक्चरर एंड योगा इंस्ट्रक्टर,पतंजलि योग समिति,बेंगलुरु, श्रीमति स्टेफिन,डिप्टी ब्रांच मैनेजर,एस.बी.आई.,कुमारा पार्क तथा श्रीमति स्वर्णा,एडमिनिस्ट्रेटर,मथरूश्री मनोविकास केन्द्र,बेंगलुरु।

इन्दौर-रामबाग। अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस पर आयोजित कार्यक्रम में शहर की प्रतिष्ठित महिलाओं को ईश्वरीय सौगात भेंट करने के पश्चात् उनके साथ ब्र.कु. छाया।

धर्म का मर्म जानें और सुखी रहें

"साम्प्रदायिकता और जातीयता का रंगीन चश्मा उतारकर देखें तो ही धर्म का शुद्ध रूप समझ में आता है। अन्यथा अपनी सम्प्रदाय का रंग-रोगन, नाम-लेबल ही सारी प्रमुखता ले लेता है, धर्म का सार महत्वहीन हो जाता है। धर्म की कसौटी पर किसी व्यक्ति को कसकर देखना हो तो यह नहीं देखेंगे कि वह किस सम्प्रदाय में दीक्षित है अथवा किस-दार्शनिक मान्यता को मानता है, अथवा किन रूढ़ियों को पालता है। वरन् यह देखेंगे कि उसका आचरण कैसा है? जीवन-व्यवहार कैसा है? कुशल है या नहीं? पावन है या नहीं? आत्म-मंगलकारी और लोक मंगलकारी है या नहीं? यदि है तो धर्मवान ही है। जितना-जितना है, उतना-उतना धर्मवान है।

वर्तमान में धरती पर धर्म के नाम पर मार-काट मची हुई है। धर्म के नाम पर वैमनस्य फैल रहा है। धर्म को राजनीति का मोहरा बनाया गया है, जिसके भुलावे में आकर जनता को धोखा दिया जा रहा है। किसी ने ठीक ही कहा है:

धर्म के नाम पर राजनीति कितनी खरी है,
जितनी चाहो रोटियाँ सेको,
यह भट्ठी हमेशा-हमेशा आग से भरी है।

जबकि धर्म के आधारभूत सिद्धांतों को नज़रअंदाज कर उसके आवरण को, उसके उपासना के मार्ग को ही महत्वपूर्ण बना दिया गया है।

आज हर कोई अपनी जाति, सम्प्रदाय, पंथ बताकर कहता है कि मैं ये हूँ, मैं वो हूँ। किंतु कोई यह नहीं कहता कि "मैं इंसान हूँ" और इंसानियत मेरा धर्म है।

क्या हिंदू, मुस्लिम, सिख, ईसाई, जैन होना यही धर्म है? क्या ऊँच-नीच, वर्णभेद को मानना धर्म है? नहीं। धर्म तो एक आदर्श जीवन शैली है, सुख से रहने की पावन पद्धति है, शान्ति प्राप्त करने की विमल विद्या है, सर्वजन कल्याणी आचार संहिता है, जो सबके लिए है।

धर्म के संबंध में श्री सत्यनारायण गोयनका के विचार हैं, "धर्म को जाति, वर्ण, वर्ग, समुदाय, देश, राष्ट्र की सीमाओं में भी नहीं बाँधा जा सकता। मानव, समाज के किसी भी वर्ग में धर्मवान व्यक्ति हो सकता है। धर्म पर किसी वर्ग विशेष का एकाधिकार नहीं हुआ करता। धर्म हमें नेक आदमी बनना सिखाता है। वह अपने सम्प्रदाय की ही नहीं प्रत्युत सारे मानव समाज की शोभा है। जो नेक आदमी ही नहीं है, वह नेक हिंदू व मुसलमान, नेक बौद्ध व जैन, नेक भारतीय व बर्मी, नेक ब्राह्मण व क्षत्रिय कैसे हो सकता है? और जो नेक आदमी हो गया, वह सही मायने में धर्मवान हो गया। उसे कोई किसी नाम से पुकारे, क्या फर्क पड़ता है!

गुलाब, गुलाब ही रहेगा, नाम बदल लेने से उसकी महक में कोई अंतर नहीं आएगा। जिस बगिया में खिलेगा न केवल उसे, बल्कि आस-पास के सारे वायुमंडल को अपनी सौरभ से सुरक्षित करेगा। अतः मुख्य बात है धर्मवान बनने की, नेक इंसान बनने की। नाम चाहे जो रहे, बगिया चाहे जिस समुदाय की हो, उस पर चाहे जिसका बोर्ड लगा हो; फूल खिलने चाहिए, सौरभ बिखरना चाहिए।"

साम्प्रदायिकता और जातीयता का रंगीन चश्मा उतारकर देखें तो ही धर्म का शुद्ध रूप समझ में आता है। अन्यथा अपनी सम्प्रदाय का रंग-रोगन, नाम-लेबल ही सारी प्रमुखता ले लेता है, धर्म का सार महत्वहीन हो जाता है। धर्म की कसौटी पर किसी व्यक्ति को कसकर देखना हो तो यह नहीं देखेंगे कि वह किस सम्प्रदाय में दीक्षित है अथवा किस-दार्शनिक मान्यता को मानता है अथवा किन रूढ़ियों को पालता है। वरन् यह देखेंगे कि उसका आचरण कैसा है? जीवन-व्यवहार कैसा है? कुशल हैं या नहीं? पावन हैं या नहीं? आत्म-मंगलकारी और लोक मंगलकारी हैं या नहीं? यदि है तो धर्मवान ही हैं। जितना-जितना है, उतना-उतना धर्मवान है। यदि नहीं है तो उस व्यक्ति का धर्म से कोई संबंध नहीं है।

धर्म के अर्थ के बारे में एक विद्वान ने लिखा है, "स्वभाव, प्रकृति अथवा वह जिससे हमारा गुण, हमारी अस्मिता मुखरित हो, जिस गुण के त्याग से हमारी पहचान समाप्त हो जाए, वही हमारा धर्म है। इस धार्मिकता के अभाव में मनुष्य पशुतुल्य कहा गया है - धर्मण हीनाः पशुभिः समानः। मानव धर्म उन लक्षणों का निर्वाह है जिनके द्वारा मानव अपने को मानव कह सके और मानव होने का दावा पूरा कर सके। यही कारण है कि आज से अढ़ाई हज़ार पूर्व बुद्ध ने धर्म की शरण में जाने का उपदेश दिया था – धम्मंशरणं गच्छामि।

शब्दकोश के अनुसार, धर्म का तात्पर्य जन्मजात स्वाभाविक गुण से होता है जैसे अग्नि का धर्म दहकना है, जल का धर्म शीतलता है आदि। यदि अग्नि दहकना त्याग दे तो क्या वह अग्नि रह जाएगी! जल यदि शीतलता का त्याग कर दे तो क्या जल रह जाएगा! इसी प्रकार मनुष्यों का भी कोई जन्मजात गुण होना चाहिए और वह धर्म है –मानवता या इंसानियत। इसीलिए कहा जाता है : सारे धर्मों का यह खुलासा पैगाम है। धर्म मज़हब असल में इंसानियत का नाम है।

इंसानियत की संधि विच्छेद करें तो इन + शान + यत। इसको हम इस तरह से भी देख सकते हैं कि हर इंसान को उन सात चीज़ों की आवश्यकता है जिनको पाने के लिए ही वो इधर-उधर, मन्दिर, मस्जिद, गुरुद्वारा आदि में दौड़ता रहता है। ये सत्य चीजें हैं- ज्ञान, सुख, शान्ति, आनंद, प्रेम, पवित्रता और शक्ति। हर मनुष्य को इसकी आवश्यकता है। इसीलिए तो ये प्राप्त करने के लिए इच्छा रखता है। इन सातों चीज़ों को एक शब्द में कहें तो "आत्मा" कहेंगे। इसे कई नाम दिए गए हैं जैसे रूह, प्राण, आतम आदि-आदि। आप ही बताइये कि कौन से मज़हब में इन सातों चीज़ों का ना होना चाहते हैं, सभी तो यही चाहते हैं ना कि मेरे जीवन में इन सातों गुणों की प्रधानता हो। उसमें बाहरी कोई भी दिवारें चाहे धर्म की, जाति की, पाती की या देश की नहीं हो सकती। तो यही धर्म का मर्म जिसे हम समझ जायें तो सुखी रह सकते हैं।

मन्दसौर-शामगढ़(म.प्र.)। अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस पर आयोजित कार्यक्रम में शरीक हुए दीपमाला ठाकुर, जिला युवा समन्वयक, नेहरू युवा केन्द्र, सब इंस्पेक्टर इंदु हीवने, ब्र.कु. कृष्ण बहन,सीतामऊ, सेवाकेंद्र संचालिका ब्र.कु. उषा, वुमेन पावर सोसायटी उपाध्यक्ष शिक्षिका दर्शना मनोचा, लायन्स क्लब अध्यक्षा दुर्गा सिसोदिया, पोरवाल महिला मंडल अध्यक्षा स्नेहलता बहन, पंजाबी महिला मंडल अध्यक्षा नीलू आहूजा, भारत सिंह राठौर, राहुल धनोतिया आदि गणमान्य लोग।

ओमशान्ति मीडिया सदस्यता हेतु सम्पर्क करें....

कार्यालय - ओमशान्ति मीडिया
संपादक - ब्र.कु. गंगाधर, ब्रह्माकुमारीज़, शान्तिवन, तलहटी, पोस्ट बॉक्स न - 5, आबू रोड (राज.) 307510
सम्पर्क- M- 9414006096, 9414182088,
Email-omshantimedia@bkivv.org

सदस्यता शुल्क : भारत - वार्षिक 200 रूपये, तीन वर्ष 600 रूपये, आजीवन 4500 रूपये। विदेश - 2500 रूपये (वार्षिक)
कृपया सदस्यता शुल्क 'ओमशान्ति मीडिया' के नाम मनीऑर्डर या बैंक ड्राफ्ट (पेयबल एट शांतिवन, आबू रोड) द्वारा भेजें।

भीतर की शक्ति से बाहरी बैक्टीरिया का सामना

ब्र.कु. शिवानी, जीवन प्रबंधन विशेषज्ञा

हमारे शरीर में बैक्टीरिया पहले से ही होते हैं। जैसे ही हमारे शरीर की इम्युनिटी पावर कमज़ोर होती है तो छोटे-छोटे वायरस भी थोड़ा-सा मौसम बदलते ही हमारे शरीर पर हमला कर देते हैं। यदि मैं मजबूत रहती हूँ तो बाहर का मौसम भले बदले, तूफान हो, बर्फ पड़े हमारे ऊपर उसका कोई प्रभाव नहीं पड़ता। मैं अपना ध्यान नहीं रखूँ और सिर्फ बोलती रहूँ कि मौसम ठीक नहीं है, सर्दी इतनी बढ़ गई, गर्मी बढ़ गई है तो बीमार पड़ना ही है। स्वस्थ रहना है या बीमार रहना है ये दोनों विकल्प हमारे पास है। जैसे हम अपने शरीर का ध्यान रखते हैं वैसे ही हमें अपने मन का भी ध्यान रखना होगा। यह उस समय नहीं होगा जब परिस्थितियाँ आती हैं। आप अपने शरीर के अंदर ताकत तब नहीं भरते हैं जब मौसम बदलता है। आप हर दिन शरीर का ध्यान रखते हैं, फिर चाहे बाहर कितना भी परिवर्तन क्यों न आए वह आपको अंदर से प्रभावित नहीं कर सकता।

शरीर के अंदर शक्ति है कि वह बाहर के परिवर्तन के साथ शरीर का सामंजस्य बैठाकर संतुलन बना लेती है। अगर बाहर से इन्फेक्शन आ रहा है तो शरीर की इम्युनिटी पावर उसे कब खत्म कर देती है हमें इसका पता भी नहीं चलता है। और हम सामान्य रूप से कार्य करते रहते हैं। उसी तरह अगर हम मन का भी ध्यान रखें, उसकी रोज़ सफाई करें, पोषण दें, व्यायाम करें तो बाहर कब क्या होगा और चला जाएगा आपको पता भी नहीं चलेगा। जब जैसी परिस्थिति होती है वैसी ही हमारी खुशी भी हो जाती है क्योंकि यह कुछ-कुछ बाहर की बातों पर निर्भर करती है। लेकिन इसकी अपनी कोई ताकत नहीं है जो हमारी खुशी को प्रभावित कर सके। आप अच्छा बोलो तो खुश, आप अच्छा नहीं बोलो तो भी खुश। इसलिए हमने पहले भी कहा था कि ध्यान रखना। बैक्टीरिया भले आए, कोई बहुत कुछ बुरा भला भी कह दे, कोई नाराज़ हो जाएगा, बच्चे संतुष्ट नहीं होंगे, बॉस गुस्सा हो जाएगा, ये सब बैक्टीरिया ही तो हैं जो बाहर से आते हैं।

आज बच्चे बहुत अच्छी तरह से बात कर रहे हैं कल अचानक उन्होंने कुछ गलत बोल दिया, ये सब परिवर्तन ही तो है जो मौसम में बदलाव लाया है। हमारे अंदर वो शक्ति है जो हम इसका सामना कर सकते हैं। जो स्वयं को सुरक्षित नहीं करेगा वो तो कष्ट सहन करेगा ही फिर चाहे वो शारीरिक हो या भावनाओं के रूप में हो। क्योंकि हमें भावनात्मक सुरक्षा के बजाए शारीरिक सुरक्षा करना आसान लगता है। इसलिए हम इमोशनल हेल्थ की तरफ ध्यान ही नहीं देते हैं। जब हम अपनी इमोशनल हेल्थ की सुरक्षा करना शुरू कर देंगे तब यह भी आसान हो जाएगा। फिर चाहे कोई कुछ भी बोले हमें फर्क नहीं पड़ेगा। एक दिन आप अपने आपको जांचना कि किसी ने आपसे बात नहीं की, बेइज्जती कर दी, अपमानित कर दिया, कुछ उल्टा-सीधा बोल दिया, तो ऐसी परिस्थिति में मैं क्या कर सकती हूँ। क्या मैं इतनी कमज़ोर हूँ कि हर किसी के व्यवहार को अपने ऊपर हावी होने दूँ। अगर हम अपना सारा नियंत्रण बाहर को दे देंगे तो दुःखी हो जाएंगे। क्योंकि बाहर चुनौतियाँ बहुत ज़्यादा हैं। इसीलिए स्वयं पर नियंत्रण स्वयं को ही रखना है।

OM - 4 - 2020 MAHARASHTRA FINAL_Page 1 and 2 16/05/2020 4:33 PM Page 5

पहचानें मन की अद्भुत शक्ति को

क्वांटम फिज़िक्स में एक बात होती है कि वो हर वक्त कणों को लेकर, मूवमेंट्स को लेकर बात करता है। अगर हवा ना हो तो हम जो बोलेंगे वो दूसरे के पास पहुंच नहीं सकता। यदि आग हो, पानी हो, लेकिन स्पेस न हो, तो हम उसको ना छू सकते हैं, न पी सकते हैं। इसलिए हर एक चीज़ आज मूव तो कर रही है, चल रही है, लेकिन उसको चलाने में प्रकृति का बहुत योगदान है। हमारा शरीर भी इन छोटे-छोटे कणों से मिलकर बना है। तो पूरे शरीर की प्रक्रिया संकल्प के आधार से ही तो है।

एक कण की भांति है संकल्प

अगर अपने शरीर को आप सूक्ष्मदर्शी से देखो तो इसमें चारों तरफ मूवमेंट्स होती रहेगी। इलेक्ट्रॉन, प्रॉटोन, न्यूट्रॉन, इससे भी छोटे-छोटे कण इसमें मूव कर रहे हैं लेकिन हमारी आँखों से दिखाई नहीं देते। इसी प्रकार हमारे संकल्पों की भी ऊर्जा है जो एक कण की भांति हर समय मूव कर रही है, चल रही है। जैसे आपने सोचा या सोचने मात्र का संकल्प भी आया तो वो एक कण की भांति समझो आपके अंदर से निकल गया। जैसे आपके अंदर एक छोटा-सा संकल्प आता है कि मुझे कुछ खाना है। तो थोड़ी देर बाद वो संकल्प बदल जाता है। और आप बिज़ी हो जाते हैं। लेकिन जो आपने इससे पहले सोचा कि कुछ खाने का मन कर रहा है, वो ट्रैवल कर रहा है जहाँ बैठकर आपने सोचा था। अब वहाँ पर जो भी व्यक्ति आयेगा और थोड़ी देर के लिए खड़ा होगा तो उसको भी भूख लगने लग जायेगी। वो उन संकल्पों का प्रभाव है जो आपने वहाँ छोड़ा था।

इसी तरह से हम जहाँ भी जाते हैं, उस समय हमारे संकल्प कुछ और चल रहे होते हैं, लेकिन वहाँ जाने पर हमें और ही कुछ फीलिंग आने लगती है तो अवश्य ही वहाँ ऐसी बातों के संकल्प होंगे ही होंगे। क्योंकि आपने तो ऐसा कुछ सोचा नहीं था। हाँ, ये हो सकता है कि कुछ न कुछ, कभी न कभी, छोटे-मोटे ऐसे संकल्प आपके चले हों जो वो कण मूव करके, आपको खींचकर वहाँ ले जायें। ये बहुत सूक्ष्म बात है क्योंकि संकल्पों की गति और उसकी तीव्रता का आंकड़ा हम नहीं लगा सकते। इसलिए छोटे-छोटे संकल्प हमारे इतने शक्तिशाली हैं कि हम क्या कुछ नया नहीं कर सकते! इसलिए संकल्प करते हुए बस थोड़ा-सा ध्यान दें कि समय बहुत तेज़ी से आगे बढ़ रहा है या बदल रहा है। हो सकता है हमारे संकल्पों की गति का प्रभाव ही है जो सबकुछ अब पहले जैसा नहीं रहा।

हम आज छोटी-छोटी बातों में परेशान हो जाते हैं, डिस्टर्ब हो जाते हैं। वो सारे संकल्प भी तो कणों के रूप में हर ओर बिखरे पड़े हैं। जब कोई इसके बीच में आता है तो वो भी उन्हीं संकल्पों के प्रभाव से प्रभावित हो जाता है। दु:ख, दर्द, तकलीफ के संकल्प हमारे, उन लोगों को इतनी अच्छी तरह से मिलते हैं जो आज दु:ख, दर्द में जी रहे हैं। फटाफट वो उन लोगों को प्रभावित करते हैं और वे और भी ज़्यादा इसके साथ जीने लग जाते हैं और कहते हैं कि इस समय तो माहौल ही ऐसा है, इसलिए हमें थोड़ा अब अपने आप को सम्भालना है, अच्छे संकल्प जानबूझकर पैदा करने हैं। हर स्थान पर उन बातों को पैदा करें, हर समय उन संकल्पों को लेकर आगे बढ़ें जिनसे समाज के अंदर उन बातों का प्रभाव जाये, जिससे व्यक्ति शक्तिशाली बने। जैसे सब स्वस्थ रहें, सब खुश रहें, सबके अंदर शक्ति आये, सब गलत समय में अपने आपका ध्यान रखें, परिस्थितियों का ध्यान रखें। और ये परिस्थितियां जब भी आयें तो उसका सामना भी कर पायें। हम आज सोशल मीडिया पर बहुत एक्टिव हैं, इतना एक्टिव हैं कि उसमें दुखद समाचार की लिस्ट इतनी ज़्यादा है कि जिसे हमने देखा भी नहीं होगा, सोचा भी नहीं होगा, वो भी हमारे अंदर आने लग जाते हैं। इसलिए कोशिश करके अपने आपको सोशल मीडिया से थोड़ा-सा दूर रख, आप सिर्फ अच्छा-अच्छा सोचने का प्रयास करें। हमारे संकल्प सबसे ज़्यादा मदद करेंगे उन परिस्थितियों में जब संकट का समय होगा। इसलिए उठो जागो हे मानव, और अपने संकल्पों को और संकल्पों को पैदा करने वाले तथ्यों को समझो। समय बलवान ज़रूर है लेकिन समय से ज़्यादा बलवान हम हैं। क्योंकि हमने जो सोचा है आज तक वही हुआ है, ना कि समय अनुसार। इसलिए सत्य के साथ चलो, ना कि समय के साथ। सत्य के साथ चलने से सब अपने आप अच्छा हो जाता है। इसलिए संकल्प का एक कण भी सबको मजबूत बना सकता है। ये है मन की अद्भुत शक्ति।

भोपाल-ईदगाह। अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस पर आयोजित 'नारी बने शक्ति' कार्यक्रम में दीप प्रज्वलित करते हुए श्रीमति सोनाली,एम.डी.,महिला वित्त एवं विकास निगम, प्रीति सलूजा,चांसलर,सैम ग्लोबल युनिवर्सिटी, मीरा सिंह,एडीटर,समीरा मैगज़ीन, रितु पटवा,सोशल वर्कर, ब्र.कु. नीता तथा अन्य गणमान्य महिलायें।

ओमशान्ति मीडिया वर्ग पहेली-13(2019-2020)

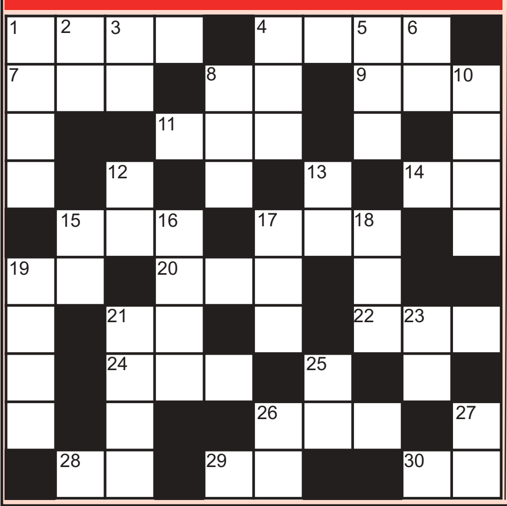

ऊपर से नीचे

1. आतंक, भय, डरावना (4)
2. धूल के छोटे-छोटे कण (2)
3. 5 विकारों में से एक मुख्य विकार (2)
4. शोभनीक, शोभायमान (3)
5. विजयी होना, पराजित करना (3)
6. किसी चीज़ का निचला हिस्सा (2)
8. सतयुग में सोने के...होते हैं (3)
10. शालीनता, कुलीनता, भद्रता (4)
12. चुस्त, उत्साही (2)
13. आम सारी दुनिया...भारत का उद्धार बाबा करते हैं (2)
15. लुप्त, छिपा हुआ, लोप (2)
16. राजा, शासक (4)
17. बेवजह, अनावश्यक (3)
18. योग्य, उचित, ठीक (3)
19. श्रेष्ठता, प्रधानता, उत्कृष्टता (4)
21. राज्यसभा, सभागार (4)
23. इज्जत, सम्मान (2)
25. पथ, रास्ता (2)
26. नशे में चूर, मदयुक्त (2)
27. बोने के लिए कोई दाना, मूल कारण, एक स्थिति (2)

बाएं से दाएं

-ब्र.कु. राजेश, शान्तिवन

1. ज़रूरत, आवश्यकता (4)
4. ज्ञान-योग के शीतल छींटे से मूर्छित को...बनाओ (4)
7. पचाना, समा लेना (3)
8. धीमा, सुस्त (2)
9. खोज, ढूंढ़ना (3)
11. नगर, प्रदेश, कस्बा (3)
14. स्वच्छ, धवल (2)
15. पद, पढ़ाई से... मिलता है (3)
17. दूरी, अन्तर (3)
19. जिम्मेवारी, कर्त्तव्य, कर्म (2)
20. बिचौलिया, आढ़ती (3)
21. अभी तुम बच्चों पर बृहस्पति की...बैठी है (2)
22. ओ बाबा आपने...कर दिया (3)
24. दुखियों पर...करो माँ-बाप हमारे, दया (3)
26. श्रेष्ठता, गुरुता, बड़ाई (3)
28. दरवाजा, द्वार (2)
29. डूबा हुआ, ओझल, समाप्त (2)
30. रहस्य, भेद (2)

इंदौर। अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस के अवसर पर ओम प्रकाश भाई जी सभागृह में आयोजित 'नारी की गौरव गाथा' कार्यक्रम में दीप प्रज्वलित करते हुए ब्र.कु. उषा, ब्र.कु. अनीता, सेंट्रल लैब की डायरेक्टर विनीता कोठारी, ब्र.कु. हेमलता दीदी, पूर्व महापौर डॉ. उमाशशि शर्मा, प्रसिद्ध कत्थक नृत्यांगना रागिनी मक्खर तथा अन्य।

चिलोडा-गुज.। फ्रंटियर हेड क्वार्टर बी.एस.एफ.,गुजरात गांधीनगर चिलोडा कैम्प में अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस पर आयोजित 'स्वास्थ्य एवं सुखी समाज में महिलाओं का योगदान' विषयक कार्यक्रम में दीप प्रज्वलित करते हुए आई.जी. सुनीता मैडम, कमांडेंट पी.एस.ओ. मैडम, उपक्षेत्रीय संचालिका ब्र.कु. नेहा, स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. तारा तथा अन्य गणमान्य महिलायें।

ग्वालियर-म.प्र.। ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा सैम मानेक्शॉ के लेक्चर हॉल में 'वैल्यूज़ ट्रेनिंग प्रोग्राम' के दौरान उपस्थित रहे एन.सी.सी. ऑफिसर्स एकेडमी के कर्नल करनैल सिंह, कमाण्डेंट व चीफ इंस्पेक्टर श्रीमति सिंह, कमांडर ओम प्रकाश, ब्र.कु. ज्योति,फैकल्टी,गोल्डन वर्ल्ड रिट्रीट सेंटर,मालनपुर संचालिका, ब्र.कु. अर्चना,सुरीनगर, ब्र.कु. महावीर, ब्र.कु. सतनाम, ब्र.कु. विवेक तथा 200 एन.सी.सी. एसोसिएट अधिकारीगण,भारतीय थल सेना व नौसेना।

ब्यावरा-म.प्र.। अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस के कार्यक्रम में दीप प्रज्वलित करते हुए प्रथम अपर जिला न्यायाधीश निवेदिता मुदगल, एस.डी.ओ.पी. किरण अहिरवार,थाना प्रभारी, ब्र.कु. लक्ष्मी, ए.बी.वी.पी. प्रांतीय उपाध्यक्ष डॉ. नमिता जैन, अखिल भारतीय मारवाड़ी समाज अध्यक्षा रेणू मंगल तथा अन्य।

भुसावल-महा.। अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस पर आयोजित 'महिला सशक्तिकरण द्वारा सामाजिक परिवर्तन' कार्यक्रम में शरीक हुए प्रतिष्ठा मंडल की अध्यक्षा रजनी ताई सावकारे, नगर सेविका लक्ष्मी ताई मकासरे, स्त्री रोग विशेषज्ञ डॉ. दीपाली बहन, बाल रोग विशेषज्ञ डॉ. अवनी ढाके, कोटेचा महाविद्यालय की प्राचार्या अर्चना मैडम, जमात-ए-हिन्द समाज की अध्यक्षा सुमैया खान, सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. सिंधु, ब्र.कु. दीपा तथा अन्य गणमान्य महिलायें।

केशोद-गुज.। होलिका दहन के पश्चात् उपस्थित हैं बिज़नेसमैन शशिकांत गाजीपरा, पूर्व धारासभ्य अरविंद लाडाणी, अग्रणी बिल्डर विरम ओडेदरा, ब्र.कु. रूपा, ब्र.कु. मीता तथा अन्य।

गर्मियों में मन हो बुझा-बुझा तो खूब खाएं खरबूजा

स्वास्थ्य

खरबूजे को मस्कमेलन भी कहते हैं। वहीं इसे दुनिया में रॉक मेलन भी कहते हैं। इसकी पैदावार इंडिया, इरान और अफ्रीका में ज्यादा होती है, खासतौर पर गर्मियों के मौसम में अप्रैल से लेकर अगस्त तक। स्वाद के साथ गर्मियों में खरबूजे का सेवन शरीर को ठंडक पहुंचाता है। साथ ही इसमें मौजूद पानी, मिनरल्स और विटामिन्स शरीर में ज़रूरी पोषक तत्वों की कमी पूरी करते हैं।

फायदे

1. गर्मियों के मौसम में अक्सर शरीर में पानी की कमी हो जाती है। जिसमें खरबूजा खाकर उसे काफी हद तक कम किया जा सकता है।
2. लू से बचने के लिए आप खरबूजा खाकर बाहर निकलें, इससे लू से बचाव होगा।

कब्ज में आराम पहुंचाये

इसमें काफी मात्रा में पानी और फाइबर पाया जाता है जो खाने को आसानी से पचाकर कब्ज जैसी समस्याओं को दूर रखता है।

एसिडिटी

मसालेदार भोजन खाने के बाद यदि पेट में जलन और एसिडिटी की समस्या हो तो खरबूजा खाकर इसे दूर किया जा सकता है।

डायरिया से राहत

डायरिया की समस्या से यदि कोई परेशान है तो खरबूजे को काली मिर्च, सेंधा नमक, भूने हुए जीरे और अदरक के साथ मिलाकर खाएं, तुरंत राहत मिलेगी।

अन्य फायदे

1. ककड़ी की तरह ये भी त्वचा की नमी को बनाये रखता है, दाग-धब्बों को हटा देता है।
2. दिल की बीमारियां, ब्लडप्रेशर और आर्टरीज़ की अकड़न को कम करता है।
3. कैंसर और डायबिटीज़ को भी कम करने में सहायक है।
4. बालों के गिरने की समस्या को कम करके उसे पोषण प्रदान करता है। बालों के विकास के लिए फायदेमंद है।

बदलते वक्त में खुद पर भरोसा रखें

समय सबका बदलता है। जिनके घर कभी आए दिन दिवाली मना करती थी, एक दिन उनकी मुंडेरों पर दीया जलाने वाला भी कोई नहीं रहता। हो सकता है वर्षों पहले हमारा वक्त बहुत अच्छा हो, आज खराब हो जाए। या किसी समय बहुत बुरा था, आज अच्छा हो जाए। हमने देखा है कि जब किसी का अच्छा समय आए तो अहंकार माथे पर चढ़कर नाचने लगता है, बुरा दौर आए तो मरने की सोचते हैं। समय अपना काम सबके प्रति दिखाता है इसलिए काल को भारतीय संस्कृति में देवता मानकर पूजा गया है। जब कभी आपका समय बदल रहा हो (अच्छा हो या बुरा) तो पांच चीज़ों को सावधानी से देखिएगा। उस बदलते समय में पहली भूमिका होगी कोई आसमानी-सुल्तानी घटना। दूसरी परिस्थितिजन्य होगी, तीसरी व्यक्तियों के कारण, चौथा कारण अज्ञात हो सकता है और पांचवा सबसे महत्वपूर्ण है आप स्वयं। अपने बदलते वक्त की सबसे बड़ी ज़िम्मेदारी खुद लीजिए और जब समय बदल रहा हो तो उसे तीन भागों में बांटिए - भूतकाल, वर्तमान और भविष्य। फिर बारीकी से देखिए कि आज मेरा आच्छा समय है तो भूतकाल में कैसा था, वर्तमान में इस अच्छे दौर का कैसे लाभ उठाऊं और यदि भविष्य में यही अच्छा दौर बुरा हो जाए तो उसे लेकर मेरी क्या तैयारी होंगी? वक्त बदलने पर सबसे अधिक भूमिका हमारी खुद की होनी चाहिए। दूसरों पर बहुत अधिक टिक गए तो वक्त अच्छा हुआ तो भी गड़बड़ा जाएंगे।

राजकोट-मोटा मवा। सेवाकेन्द्र के दशाब्दी महोत्सव में शरीक हुए रमेश ठक्कर,चेयरमैन,गिरीराज हॉस्पिटल, परेश गजेरा,प्रमुख श्री राजकोट बिल्डिंग एसोसिएशन, पी.एस.आई. धोला साहेब,मोटा मवा पुलिस स्टेशन, डॉ. विकास अरोड़ा,डायरेक्टर,सनशाइन ग्रुप इंस्टीट्यूशन, ब्र.कु. भारती दीदी, ब्र.कु. रेखा, ब्र.कु. चेतना तथा शहर के अन्य गणमान्य लोग।

भिवंडी-मानसरोवर(महा.)। शिवजयंती कार्यक्रम में दीप प्रज्वलित करते हुए म्युनिसिपल कमिश्नर प्रवीण अष्टिकर, ब्र.कु. अलका तथा अन्य।

सिवनी-म.प्र.। अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस के कार्यक्रम में दीप प्रज्वलित करते हुए जनपद अध्यक्षा प्रतीक्षा राजपूत, मातृ शक्ति संगठन अध्यक्षा सीमा चौहान, उदय महिला मंडल अध्यक्षा संगीता मालू, ब्र.कु. ज्योति, ब्र.कु. गीता तथा अन्य।

राजकोट-गुज.। त्रिमूर्ति शिव जयंती पर आयोजित कार्यक्रम में केक कटिंग करते हुए ब्र.कु. नलिनी, ब्र.कु. गीता तथा ब्र.कु. डिम्पल।

चरोदा-आदर्श नगर(छ.ग.)। अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस पर आयोजित 'महिला जागृति आध्यात्मिक सम्मेलन' के दौरान समूह चित्र में पद्मश्री शमशाद बेगम,सहयोगी जन कल्याण समिति,बालोद, डोमेश्वरी वर्मा,जिला पंचायत अध्यक्षा, सरिता बघेल,संयोजिका,हमारा प्रयास सबका विकास,रायपुर, रजनी बघेल,वरिष्ठ समाज सेविका,भिलाई, लक्ष्मी बघेल,पूर्व विधायक,बालोद बाज़ार, अर्चना यादव,सचिव,यादव समाज ग्राम-महका, सीता साहू,पूर्व नगर पालिका अध्यक्षा,भिलाई-चरोदा, अंजू राजपूत,प्रधान अध्यापिका,गंगोत्री विद्यालय,चरोदा, निवेदिता साहू,प्रधान अध्यापिका,मानसरोवर विद्यालय,जंजगिरी, सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. शिवानी तथा अन्य।

धमतरी-छ.ग.। महाशिवरात्रि के अवसर पर आयोजित कार्यक्रम में मंचासीन हैं गणराज सिन्हा सरपंच ग्रामपंचायत नवागांव, रोशनी प्रकाश पंवार जनपद सदस्य, सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. सरिता, कविता बाबर जिला पंचायत सदस्य एवं अन्य सरपंच तथा पंचगण।

मुम्बई-मीरा रोड। मीरा-भयंदर महानगरपालिका के नव निर्वाचित उपमहापौर हसमुख गहलोत को गुलदस्ता भेंट करते हुए ब्र.कु. रंजन बहन। साथ हैं ब्र.कु. शुभा, नगरसेवक दिनेश जैन तथा नगरसेवक अनिल विरानी।

सरायपाली-छ.ग.। नवनिर्वाचित नगरपालिका अध्यक्ष, उपाध्यक्ष, पार्षद अभिनंदन समारोह के दौरान समूह चित्र में उपाध्यक्षा सुशीला पटेल, श्रीमती राखी चौहान, ब्र.कु. अहिल्या, ब्र.कु. सुनीता तथा पार्षदगण।

वडोदरा-अलकापुरी। महिला दिवस पर आयोजित 'महिला सेमिनार' में दीप प्रज्वलित करते हुए नारी संरक्षण गृह की सुपरीन्टेंडेंट हेताक्षी बहन, ब्र.कु. डॉ. निरंजना, अखिल भारतीय महिला परिषद् की अध्यक्षा नैना पारीख, ब्र.कु. कपिला बहन, ब्र.कु. भावना तथा ब्र.कु. डिम्पल।

उसलापुर-बिलासपुर(छ.ग.)। अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस पर आयोजित 'महिला सशक्तिकरण द्वारा सामाजिक परिवर्तन' कार्यक्रम में शरीक हुए विधायक शैलेष पांडे की धर्मपत्नी रितु पांडे, सी.आर.पी.एफ. के डी.आई.जी.पी. की धर्मपत्नी आशा रानी, डी.आई.जी.पी. मेडिकल नीतू वात्सल्यन, डॉ. सरोज, ऑफिसर रितु तथा अन्य महिलायें।

अनुभव

बाबा ने अमृत पिलाकर मूक को दिया स्वर

ब्र.कु. बबन, मीरा सोसाइटी पुणे

20 साल पहले की बात है, मैं अपने दोस्तों के साथ गेंद खेल रहा था। पुणे कस्बा पेठ में जहाँ हम खेल रहे थे, वहाँ सामने ही ब्रह्माकुमारी गीता पाठशाला थी। दरवाज़ा खुला होने के कारण हमारी गेंद पाठशाला के अंदर चली गई और पिता श्री प्रजापिता ब्रह्मा बाबा की तस्वीर से जा टकराई। कांच की तस्वीर के टुकड़े-टुकड़े हो गए। वहां की बूढ़ी-बूढ़ी माताओं ने हमें अंदर बुलाया। हमने सोचा कि अब तो यह माताएं हमें डांटेंगी और घर तक हमारी बहादुरी का समाचार पहुंच जाएगा। लेकिन हुआ उल्टा, उन्होंने बहुत ही प्यार से हमें बिठाया, प्रसाद(टोली)दिया, बाबा का परिचय दिया और रोज़ आने के लिए कहा। बचपन की उस अवस्था में ज्ञान तो इतना समझ में नहीं आया लेकिन यहां की माताएं बहुत अच्छी हैं, यहाँ रोज़ प्रसाद मिलता है, ऐसा सोच कर मैं रोज़ आने लगा। इस तरह से मेरा दिव्य अलौकिक जन्म हुआ। जन्म से ही मैं गूंगा था। घर की आर्थिक स्थिति बिल्कुल साधारण थी इसीलिए पढ़ाई भी नहीं हो पाई। अलौकिक जन्म के बाद एक गुरुवार के दिन माताएं मुझे मीरा सोसाइटी सेंटर पर लेकर गईं। मैं क्लास में सबसे पीछे, कोने में बैठ गया क्योंकि फटे और गंदे कपड़ों के कारण मुझे बहुत शर्म आ रही थी।

प्यारे बाबा की मुरली की समाप्ति के पश्चात् मुझे जब अमृत जल पिलाया गया तो मुख में जल जाते ही तेज़ दर्द हुआ। और शीघ्र ही मुख ठंडा भी हो गया। मेरे मुख से आवाज़ निकलने लगी। मैं बाबा...बाबा...कहने लगा। मुझे जैसे कि स्वर्गीय आनंद मिला। माताओं को भी आश्चर्य हुआ कि यह भगवान की कैसी लीला है। मैं बोलने लगा, यह शुभ समाचार सुनकर लौकिक परिवार भी चकित हो गया।

तब से मेरा भोजन शुद्ध हो गया। अभी भी मेरी वाचा इतनी स्पष्ट तो नहीं है लेकिन फिर भी दैवी परिवार और लौकिक परिवार सहज समझ लेते हैं। बचपन से ही आदरणीया सुंदरी दीदी जी की अलौकिक मां जैसी पालना मिल रही है। मेरे जैसे गांव के छोरे को, गूंगे को वाचा देकर परमात्मा शिव पिता ने मेरा जीवन ही बदल दिया। मानो मुझे नई ज़िंदगी मिल गई हो। संगमयुग पर ही मुझे साहूकार बना दिया। मैं धन्य-धन्य हो गया। कितना धन्यवाद दूं प्यारे बाबा को। अभी तो दिल में बाबा, वाणी में बाबा, कर्म में बाबा, नज़र में भी एक बाबा ही रहता है। मैं जहां भी लौकिक-अलौकिक कार्यक्रम में जाता हूँ तो सभी को यह अनुभव सुनाता हूँ। सुनने वाले बाबा के इस चमत्कार से बहुत आश्चर्यचकित भी होते हैं और उनका परमात्मा में निश्चय भी बढ़ जाता है। मुझे सम्पूर्ण निश्चय है कि भगवान ही सुख कर्ता, दु:ख हर्ता और 21 जन्मों के लिए ज़िंदगी संवारने वाला है। ऐसे पिता को बहुत ही प्यार से याद कर भाग्य बनाने की अनमोल घड़ियां अभी हैं, अभी नहीं तो कभी नहीं।

ग्वालियर-म.प्र.। बीएसएफ अकादमी,टेकनपुर में 'स्ट्रेस मैनेजमेंट' पर आयोजित वर्कशॉप में सम्बोधित करते हुए ब्र.कु. प्रहलाद।

इंदौर-गंगोत्री विहार(म.प्र.)। त्रिमूर्ति शिवजयंती पर सेवाकेन्द्र पर आयोजित कार्यक्रम में मेरा भारत स्वर्णिम भारत अभियान बस यात्रा के पहुंचने पर यात्रियों का अभिनन्दन करने के पश्चात् मंचासीन हैं सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. सीमा, ब्र.कु. छाया, क्लॉथ मार्केट एसोसिएशन के अध्यक्ष हंसराज जैन, बस अभियान के यात्री ब्र.कु. पूजा, ब्र.कु. प्रतिमा, ब्र.कु. सीमा, ब्र.कु. रक्षा, ब्र.कु.राजेन्द्र, ब्र.कु. प्रतीक, ब्र.कु. सचिन, ब्र.कु. जयप्रकाश तथा ब्र.कु. विकास।

जबलपुर-नेपियर टाउन। महिला दिवस के अवसर पर 'नारी शक्ति एवं स्वर्णिम भारत' विषयक संगोष्ठी में दीप प्रज्वलित करते हुए गीता शरत् तिवारी,सचिव,म.प्र. कांग्रेस वरिष्ठ समाजसेवी, डॉ. अलका अग्रवाल,प्रेसीडेंट,ऑब्सगायनी सोसायटी,जबलपुर, ब्र.कु. भावना,स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका, डॉ. पुष्पा पांडे,गीताविद्, आशा तिवारी,समाजसेवी, ज्योति जैन,समाजसेवी तथा अन्य।

मुरैना-म.प्र.। शिवजयंती पर आयोजित कार्यक्रम में शिवध्वजारोहण करने के पश्चात् प्रतिज्ञा करते हुए सी.एम.एच.ओ. डॉ.आर.सी. बांदिल, ब्र.कु. रेखा तथा अन्य भाई-बहनें।

जबलपुर-विजयनगर। महिला दिवस के अवसर पर इंस्टीट्यूशन ऑफ इंजीनियर्स के जबलपुर लोकल चेप्टर द्वारा आयोजित कार्यक्रम में आध्यात्मिक क्षेत्र में की गई सेवाओं के लिए ब्र.कु. विनीता बहन को सम्मानित करते हुए डी.एस.पी. सुरेखा परमार, इंडियन मेडिकल एसोसिएशन,जबलपुर की अध्यक्षा डॉ. संगीता श्रीवास्तव तथा रोटरी क्लब की अध्यक्षा रचना त्रिवेदी।

दीसा-गुज.। अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस पर आयोजित 'महिला सशक्तिकरण' कार्यक्रम में सम्बोधित करते हुए ब्र.कु. सुरेखा। मंचासीन हैं डॉ. तेजल पटेल,पूर्व नगरपालिका प्रमुख तथा कमलेश अग्रवाल,महिला मंडल।

बार्शी-महा.। अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस पर आयोजित स्नेह मिलन कार्यक्रम में सम्बोधित करते हुए ब्र.कु. संगीता। मंचासीन हैं लक्ष्मीबाई केळकर पतसंस्था की अध्यक्षा सावित्री हालमे, आधार प्रतिष्ठान व लिटल स्टार इंग्लिश मीडियम की संस्थापिका प्रमिला मठपति, एस.टी. महिला वाहक संघटना सोलापुर विभाग की उपाध्यक्षा उमा पवार, एडवोकेट राजश्री तलवाड, डॉ. स्नेहल माढेकर, डॉ. लोखंडे सुपर बाज़ार की संचालिका शुभांगी पाटील, सरस्वती विद्यालय की प्रधानाचार्या प्रभा बेणे तथा महिला पुलिस प्राजक्ता देशपांडे।

गांधीनगर-गुज.। अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस पर ऑपाल ग्रुप की ओर से स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. कैलाश बहन को 'विशिष्ट महिला पदक' से सम्मानित करने के पश्चात् मंचासीन हैं प्रज्ञेश मेसरिया, हर्षवर्धन पारिख, गांधीनगर समाचार के पत्रकार कश्यप निमावत तथा सम्बोधित करते हुए ब्र.कु. बहन।

करूर-त.ना.। अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस पर आयोजित कार्यक्रम में दीप प्रज्वलित करते हुए श्रीमति के.एम. सुधा,म्युनिसिपैलिटी कमिश्नर, डॉ. प्रीथा,फेमस ऑब्स्टेट्रीशियन-गायनोकोलॉजिस्ट-फर्टीलिटी स्पेशलिस्ट, श्रीमति जी. श्रीप्रिया,हेल्थ ऑफिसर,करूर म्युनिसिपैलिटी, ब्र.कु. अम्बिका, ब्र.कु. परमेश्वरी, लायन्स क्लब ऑफ करूर शक्ति चार्टर प्रेसीडेंट जेया पोन्नुवेल, ऑडिटर ब्र.कु. श्रीनिवासन तथा अन्य महिलायें।

जबलपुर-कटंगा कॉलोनी। महिला दिवस पर ब्रह्माकुमारीज़ के महिला प्रभाग द्वारा आयोजित 'महिला सशक्तिकरण द्वारा सामाजिक परिवर्तन' कार्यक्रम में दीप प्रज्वलन के पश्चात् उपस्थित हैं डॉ. प्रज्ञा धीरावाणी,स्त्री रोग विशेषज्ञा, डॉ. किरण जैन,प्राध्यापिका,महाकौशल कॉलेज, रंजना गुप्ता,मुस्कान महिला क्लब की अध्यक्षा, सोनिया दिवाकर,वरिष्ठ समाजसेवी तथा सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. विमला।

इंदौर-अग्रवाल नगर। अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस पर आयोजित कार्यक्रम में दीप प्रज्वलित करते हुए लायन्स क्लब अध्यक्षा मनोरमा लड्ढा, एनि बेसेंट स्कूल की प्रिन्सीपल, सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. सावित्री तथा अन्य प्रतिष्ठित महिलायें।

OM - 4 - 2020 MAHARASHTRA FINAL_Page 1 and 2 16/05/2020 4:33 PM Page 8

पाप कर्म और विकर्म में अन्तर

परमात्मा के महावाक्य हम सभी सुनते हैं। परमात्मा की मुरली से हमें अपने दिल दर्पण में देखना है कि हम कहाँ तक पहुँचे हैं। उसको हम जान सकें और समझ सकें। तो इसीलिए ये महावाक्य हम बच्चों को जैसे बार-बार अटेन्शन खिंचवाते हुए हमें महसूस कराते हैं कि पुरुषार्थ की रेस में आगे के आगे बढ़ते रहना है। बाबा के अन्तिम महावाक्य निराकारी भव, निरहंकारी भव, निर्विकारी भव और जैसे ही बाबा ये अन्तिम महावाक्य कहते हुए हम बच्चों को ये बताने का प्रयत्न कर रहे थे कि सम्पूर्णता को प्राप्त करने के लिए इन तीन बातों पर भी हम अगर अटेन्शन दें तो सम्पूर्णता दूर नहीं। दूसरा बाबा का जो भाव था कि मैंने जो सम्पूर्णता को प्राप्त किया है इन्हीं तीन बातों पर अटेन्शन दिया है। स्थिति या मन्सा में निराकारी स्थिति। जब तक निराकारी स्थिति हमारी नहीं है तब तक हम विजय श्री नहीं पा सकते।

बाबा कहते हैं कि बच्चे देह सहित, देह के सभी सम्बन्धों को बुद्धि से हटाए सिर्फ एक मेरे साथ जोड़ो। सत्य के साथ जोड़ो या परमात्मा के साथ जोड़ो क्योंकि वही सुख दाता है। कहने का भावार्थ यही है कि स्थिति जितनी हमारी ऊंच होगी, जितनी साकारी से आकारी, आकारी से निराकारी में हम कदम आगे बढ़ाते जायेंगे और उतनी ये स्थिति हमारी निरन्तर होने लगेगी। देही अभिमानी कहो, आत्म अभिमानी कहो। देही अभिमानी जब हम कर्म करते हैं और आत्म अभिमानी जब हम विशेष योग में बैठते हैं उस समय ये देह भी भूली हुई हो। और सिर्फ एक निराकारी स्थिति हमारी मजबूत हो। और जितनी हमारी स्थिति मजबूत बनती जायेगी उतना मन के अन्दर कोई भी प्रकार का व्यर्थ का कीचड़ा होगा या कोई भी प्रकार का और थॉट होगा वो सम्पूर्ण रीति से समाप्त हो जायेगा। परमात्मा का कहना है कि बच्चे निराकारी बनने का अर्थ है कि हमारे पाप-कर्म देह समझने से शुरू होते हैं। जैसे ही हम अपने आपको इस कॉन्शस मन में ले आते हैं तो हमारे संकल्प में मोह, लोभ ये आने लग जाते हैं। और जैसे ही ये सब शुरू होता है समझो पाप-कर्म बनना शुरू हो जाता है। कर हम शरीर और शरीर के सम्बन्धों के लिए होते हैं लेकिन होता

-ब्र.कु. उषा,वरिष्ठ राजयोग प्रशिक्षिका

ये तपस्या कितनी गहरी और लम्बी है जिस पर सिर्फ और सिर्फ अटेन्शन दें तो क्या कुछ नहीं हो जायेगा। रिअलाइजेशन तो तभी होगा ना क्योंकि ज्ञान में तर्क भी दे देंगे। लेकिन दिल दर्पण में दिल गवाही देना शुरु कर देगा कि नहीं ये सही नहीं है।

स्वार्थ है। जिसके कारण हर पल विकर्म बन रहा होता है। अब आप सोचो हम परमात्मा को प्रत्यक्ष करना चाहते हैं। लेकिन थोड़ी भी बुद्धि स्थूल में जा रही है तो हमारे से कैसे कर्म होंगे? इतना लम्बा समय हमको क्यों लग रहा है सम्पन्न होने में? क्योंकि जो मूल है वो कहीं बिखरा हुआ है। वो है अभ्यास। भगवान का रथ जिसको हम ब्रह्मा कहते हैं, जिन्होंने बार-बार अभ्यास करके अपने आपको देह से मुक्त किया। और देह से मुक्त अर्थात् देह जब भूले तो ऑटोमेटिकली देह के सम्बन्ध, देह के पदार्थ, देह के जो कुछ भी भाव, सब समाहित हो गये। और सारे विकर्म बन्द। बस यही हम सभी को परमात्मा की तरफ से एक सैम्पल मिला जिसने अभ्यास किया और सिर्फ अभ्यास किया चलते-फिरते, उठते-बैठते, और वो आज फरिश्ते के रूप में सबके सामने उदाहरण है।

इस दुनिया में हम चाहे कितने भी हथकंडे अपना लें। चाहे कितने भी अच्छे कर्म करने का दावा करें। लेकिन हमसे विकर्म होते ही हैं। हम निःस्वार्थ सेवा करने का दावा करते हैं लेकिन उसमें भी मान-शान की इच्छा है। उसका भी बोझ हमारे ऊपर तो है ना। और निराकारी जो है निराकारी अर्थात् जिसका कोई शरीर नहीं है उसको प्रकृति का कोई आकर्षण नहीं है। वो सबकुछ भगवान जैसा करने लग जाता है। उससे पाप होने बंद हो जायेंगे। ये तपस्या कितनी गहरी और लम्बी है जिस पर सिर्फ और सिर्फ अटेन्शन दें तो क्या कुछ नहीं हो जायेगा। रिअलाइजेशन तो तभी होगा ना क्योंकि ज्ञान में तर्क भी दे देंगे। लेकिन दिल दर्पण में दिल गवाही देना शुरु कर देगा कि नहीं ये सही नहीं है। तो इसीलिए एक तो दिल का दर्पण है और एक ज्ञान का दर्पण है। और कौन सा दर्पण है? और ब्रह्मा बाबा के प्रत्यक्ष जीवन का दर्पण है। परमात्मा कई बार अपने अव्यक्त महावाक्यों में कहते आए हैं कि अगर ना समझ में आये तो देखो कि अगर ब्रह्मा बाबा इस स्थान पर होते तो क्या करते? क्या बाबा ऐसा कहते थे? बाबा ऐसा करते थे? सिचुएशन क्या बाबा के सामने नहीं आई? आई ना! लेकिन जो बहाना मैं दे रही हूँ या दे रहा हूँ तो मेरी जगह अगर बाबा होते तो क्या करते? ये दर्पण अगर सामने ले आओ साकार बाबा का तो जैसे दूध का दूध, पानी का पानी हो जाता कि बाप होता तो क्या करता? तो बाबा का एक प्रत्यक्ष जीवन का दर्पण मिला है। और कौन-सा दर्पण मिला है? श्रीमत का दर्पण मिला है हमें। इसलिए आज से और अभी से हमें निराकारी स्थिति का अभ्यास करना है। स्थिति बनाने का बस यही एक तरीका है।

ओलपाड-गुज.। कानूनी शिक्षण शिविर एवं अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस पर आयोजित 'एम्पावरमेंट ऑफ वुमेन्स फॉर सोशल ट्रान्सफॉर्मेशन' कार्यक्रम में दीप प्रज्वलित करते हुए ब्र.कु. मयूरी बहन,चेयरपर्सन व स्पीकर, सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. धर्मिष्ठा, एडवोकेट बलवंत पटेल, एडवोकेट मंगला बहन, एडवोकेट नटवर भाई, कोर्ट के रजिस्ट्रार वाई.एम. खेंगर तथा अन्य गणमान्य लोग।

मंदसौर-गरोठ(म.प्र.)। अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस पर गांधी सागर में आयोजित परिचर्चा का उद्घाटन करते हुए हाइयर सेकेण्डरी स्कूल की प्राचार्य अनीता श्रीवास्तव, समाज सेवा महिला मंडल अध्यक्षा बबीता चक्रवर्ती, ब्र.कु. सरिता, ब्र.कु. शीतल तथा समाजसेवी बहनें।

पातूर-अकोला(महा.)। महाशिवरात्रि पर आयोजित कार्यक्रम में सम्बोधित करते हुए ब्र.कु.लीना। साथ मंचासीन हैं जिला परिषद एवं पंचायत समिति के नवनिर्वाचित सदस्य।

मुम्बई-माहिम। अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस पर राम मंदिर,माहिम वेस्ट में आयोजित 'वुमेन फॉर सोशल ट्रांसफॉर्मेशन' विषयक कार्यक्रम में मंचासीन हैं शीतल गम्भीर,कॉर्पोरेटर, स्मिता कोचरेकर,ट्रस्टी मेम्बर,राम मंदिर, ज्योति मुले,माहिम पुलिस स्टेशन, शेखर लाड,हॉल ऑर्गनाइज़र, डॉ. गुरमीत बचेर,स्टेज कोऑर्डिनेटर, जुबेदा खांदवानी तथा ब्रह्माकुमारी बहन।

! यह जीवन है !

आप इस संसार में कई लोगों को जानते होंगे जिन्हें आप स्वार्थी मानते हैं, जो आवश्यकता पड़ने पर ही आपको स्मरण करते हैं। किंतु जैसे ही आपकी सहायता की आवश्यकता पड़ती है तो हाथ जोड़कर आपके सामने आते हैं। तब हमारे मन में उसके प्रति बड़ा ही क्रोध आता है, मन में बहुत दुख होता है। और उस समय मन से यह स्वतः निकलता है कि दुबारा इस व्यक्ति की सहायता न करें। परन्तु ऐसा कभी मत किजिए...! यह याद रखिए दीपक का स्मरण व्यक्ति तभी करता है, जब अंधकार गहरा हो जाता है। उन्हें स्वार्थी मानकर व्याकुल मत होंए बल्कि स्वयं को दीपक मानकर आनंदित होंए। भाग्यवान समझिए खुद को कि आप इस संसार में किसी की सहायता करने योग्य हैं। किसी के स्वार्थी होने से स्वयं का दृष्टिकोण मत बदलिए।

ख्यालों के आईने में...

नदी में गिरने से किसी की जान नहीं जाती, जान तभी जाती है जब तैरना नहीं आता। परिस्थितियाँ कभी समस्या नहीं बनती, समस्या तभी बनती है जब हमें परिस्थिति से निपटना नहीं आता।

शीशे की तरह चरित्रवान बनो ताकि लोग तुम्हें देखकर अपने चरित्र के दोषों को दूर करें, जैसा कि वे शीशे को देखकर अपने चेहरे के दोषों को दूर करते हैं।

OM - 4 - 2020 MAHARASHTRA FINAL_Page 1 and 2 16/05/2020 4:33 PM Page 9

कथा सरिता...

जीवन वही है जो आप हैं

एक छोटे से गांव के बाहर सुबह-सुबह एक बैलगाड़ी आकर रुकी। और उस बैलगाड़ी में बैठे हुए आदमी ने उस गांव के द्वार पर बैठे हुए एक बूढ़े से पूछा, इस गांव के लोग कैसे हैं? मैं इस गांव में हमेशा के लिए स्थायी निवास बनाना चाहता हूँ। उस बूढ़े ने कहा- मेरे मित्र, अजनबी मित्र, इसके पहले कि मैं तुम्हे बताऊं कि इस गांव के लोग कैसे हैं, क्या मैं पूछ सकता हूँ कि उस गांव के लोग कैसे थे, जिससे तुम आ रहे हो?

उस आदमी ने कहा- उनका नाम और उनका ख्याल ही मुझे क्रोध और घृणा से भर देता है। उन जैसे दुष्ट लोग इस पृथ्वी पर कहीं भी नहीं होंगे। उन शैतानों के कारण ही, उन पापियों के कारण ही तो मुझे वह गांव छोड़ना पड़ा है। मेरा हृदय जल रहा है। मैं उनके प्रति घृणा से और प्रतिशोध से भरा हुआ हूँ। उनका नाम भी न लें। उस गांव की याद भी न दिलाएं।

उस बूढ़े ने कहा- फिर मैं क्षमा चाहता हूँ कि आप बैलगाड़ी आगे बढ़ा लें। इस गांव के लोग और भी बुरे हैं। मैं उन्हें बहुत वर्षों से जानता हूँ। वह बैलगाड़ी आगे बढ़ी ही थी कि एक घुड़सवार आकर रुक गया और उसने भी यही पूछा उस बूढ़े से कि इस गांव में निवास करना चाहता हूँ। कैसे हैं इस गांव के लोग?

उस बूढ़े ने कहा- उस गांव के लोग कैसे थे जहाँ से तुम आ रहे हो? उस घुड़सवार की आंखों में आनंद के आंसू आ गए। उसकी आंखें किसी दूसरे लोक में चली गईं। उसका हृदय किन्हीं की स्मृतियों से भर गया और उसने कहा, उनकी याद भी मुझे आनंद से भर देती है। कितने प्यारे लोग थे। और मैं दु:खी हूँ कि उन्हें छोड़कर मुझे मजबूरियों में आना पड़ा है। लेकिन एक सपना मन में है कि कभी फिर उस गांव में वापस लौट कर बस जाऊं। वह गांव ही मेरी कब्र बने, यही मेरी कामना है। बहुत भले थे वे लोग। उनकी याद न दिलाना। उनकी याद से ही मेरा दिल टूटा जाता है। उस बूढ़े ने कहा- इधर आओ, हम तुम्हारा स्वागत करते हैं। इस गांव के लोगों को तुम उस गांव के लोगों से भी अच्छा पाओगे। मैं इस गांव के लोगों को भलीभांति जानता हूँ। काश, वह पहला बैलगाड़ी वाला आदमी भी इस बात को सुन लेता। लेकिन वह जा चुका था।

शिक्षा : इस पृथ्वी पर आप वैसे ही लोग पाएंगे जैसे आप हैं। आपके अतिरिक्त और कुछ भी नहीं है पृथ्वी! जीवन वही है जो आप हैं।

संगठन शक्ति

एक वन में बहुत बड़ा अजगर रहता था। वह बहुत अभिमानी और अत्यंत क्रूर था। जब वह अपने बिल से निकलता तो सब जीव उससे डरकर भाग खड़े होते। उसका मुँह इतना विकराल था कि खरगोश तक को निगल जाता था। एक बार अजगर शिकार की तलाश में घूम रहा था। सारे जीव अजगर को बिल से निकलते देखकर भाग चुके थे। जब अजगर को कुछ न मिला तो वह क्रोधित होकर फुंफकारने लगा और इधर-उधर खाक छानने लगा।

वहीं निकट में एक हिरणी अपने नवजात शिशु को पत्तियों के ढेर के नीचे छिपाकर स्वयं भोजन की तलाश में दूर निकल गई थी। अजगर की फुंफकार से सूखी पत्तियां उड़ने लगीं और हिरणी का बच्चा नज़र आने लगा। अजगर की नज़र उस पर पड़ी तो हिरणी का बच्चा उस भयानक जीव को देखकर इतना डर गया कि उसके मुँह से चीख तक न निकल पाई। अजगर ने देखते ही देखते नवजात हिरण के बच्चे को निगल लिया। तब तक हिरणी भी लौट आई थी, पर वह क्या करती? आँखों में आसूं भरके दूर से अपने बच्चे को काल का ग्रास बनते देखती रही। हिरणी के शौक का ठिकाना न रहा। उसने किसी न किसी तरह अजगर से बदला लेने की ठान ली। हिरणी की एक नेवले से दोस्ती थी। शोक में डूबी हिरणी अपने मित्र नेवले के पास गई और रो-रोकर उसे अपनी दु:खभरी कथा सुनाई। नेवले को भी बहुत दु:ख हुआ। वह दु:ख भरे स्वर में बोला मित्र, मेरे बस में होता तो मैं उस नीच अजगर के सौ टुकड़े कर डालता। पर क्या करें, वह छोटा-मोटा सांप नहीं है, जिसे मैं मार सकूं वह तो एक अजगर है। अपनी पूंछ की फटकार से ही मुझे अधमरा कर देगा। लेकिन यहाँ पास में चींटियों की एक बांबी है। वहाँ की रानी मेरी मित्र है। उससे सहायता मांगनी चाहिए। हिरणी ने निराश स्वर में विलाप किया, "पर जब तुम्हारे जितना बड़ा जीव उस अजगर का कुछ बिगाड़ने में समर्थ नहीं है तो वह छोटी सी चींटी क्या कर लेगी?" नेवले ने कहा, "ऐसा मत सोचो, उसके पास चींटियों की बहुत बड़ी सेना है। संगठन में बड़ी शक्ति होती है।" हिरणी को कुछ आशा की किरण नज़र आई। नेवला हिरणी को लेकर चींटी रानी के पास गया और उसे सारी कहानी सुनाई। चींटी रानी ने सोच-विचार कर कहा, "हम तुम्हारी सहायता अवश्य करेंगे। हमारी बांबी के पास एक संकरीला नुकीले पत्थरों भरा रास्ता है। तुम किसी तरह उस अजगर को उस रास्ते पर आने के लिए मजबूर करो, बाकी काम मेरी सेना पर छोड़ दो।" नेवले को अपनी मित्र चींटी रानी पर पूरा विश्वास था इसलिए वह अपनी जान जोखिम में डालने पर तैयार हो गया। दूसरे दिन नेवला जाकर सांप के बिल के पास अपनी बोली बोलने लगा। अपने शत्रु की बोली सुनते ही अजगर क्रोध में भरकर अपने बिल से बाहर आया। नेवला उसी संकरे रास्ते वाली दिशा में दौड़ा। अजगर ने पिछा किया। अजगर रुकता तो नेवला मुड़कर फुंफकारता और अजगर को गुस्सा दिलाकर फिर पीछा करने पर मजबूर करता। इसी प्रकार नेवले ने उसे संकरीले रास्ते से गुज़रने पर मजबूर कर दिया। नुकीले पत्थरों से उसका शरीर छिलने लगा। जब तक अजगर उस रास्ते से बाहर आया तब तक उसका काफी शरीर छिल गया था और जगह-जगह से खून टपक रहा था।

उसी समय चींटियों की सेना ने उस पर हमला कर दिया। चींटियां उसके शरीर पर चढ़कर छिले स्थानों के नंगे मांस को काटने लगीं। अजगर तड़प उठा। उसके शरीर से खून टपकने लगा जिससे मांस और छिलने लगा और चींटियों को आक्रमण के लिए नए-नए स्थान मिलने लगे। अजगर चींटियों का क्या बिगाड़ता? वे हज़ारों की संख्या में उस पर टूट पड़ी थीं। कुछ ही देर में क्रूर अजगर ने तड़प-तड़पकर दम तोड़ दिया।

निर्दोष को सजा

बहुत समय पहले हरिशंकर नाम का एक राजा था। उसके तीन पुत्र थे और अपने उन तीनों पुत्रों में से वह किसी एक पुत्र को राजगद्दी सौंपना चाहते थे। पर किसे? राजा ने एक तरकीब निकाली और उसने तीनों पुत्रों को बुलाकर कहा-अगर तुम्हारे सामने कोई अपराधी खड़ा हो तो तुम उसे क्या सज़ा दोगे?

पहले राजकुमार ने कहा कि अपराधी को मौत की सज़ा दी जाए तो दूसरे ने कहा कि अपराधी को काल कोठरी में बंद कर दिया जाये। अब तीसरे राजकुमार की बारी थी। उसने कहा कि पिताजी सबसे पहले यह देख लिया जाये कि उसने गलती की भी है या नहीं।

इसके बाद उस राजकुमार ने एक कहानी सुनाई - किसी राज्य में राजा हुआ करता था, उसके पास एक सुन्दर-सा तोता था। वह तोता बड़ा बुद्धिमान था, उसकी मीठी वाणी और बुद्धिमत्ता की वजह से राजा उससे बहुत खुश रहता था। एक दिन की बात है कि तोते ने राजा से कहा कि मैं अपने माता-पिता के पास जाना चाहता हूँ। वह जाने के लिए राजा से विनती करने लगा।

तब राजा ने उससे कहा कि ठीक है पर तुम्हें पांच दिनों में वापस आना होगा। वह तोता जंगल की ओर उड़ चला, अपने माता-पिता से जंगल में मिला और खूब खुश हुआ। ठीक पांच दिनों के बाद जब वह वापस राजा के पास जा रहा था तब उसने एक सुन्दर-सा उपहार राजा के लिए ले जाने का सोचा। वह राजा के लिए अमृत फल ले जाना चाहता था। जब वह अमृत फल के लिए पर्वत पर पहुंचा तब तक रात हो चुकी थी। उसने फल को तोड़ा और रात वहीं गुज़ारने का सोचा। वह सो रहा था कि तभी एक सांप आया और उस फल को खाना शुरू कर दिया। सांप के ज़हर से वह फल भी विषाक्त हो चुका था।

जब सुबह हुई तब तोता उड़कर राजा के पास पहुँच गया और कहा- राजन मैं आपके लिए अमृत फल लेकर आया हूँ। इस फल को खाने के बाद आप हमेशा के लिए जवान और अमर हो जायेंगे। तभी मंत्री ने कहा कि महाराज पहले देख लीजिए कि फल सही भी है कि नहीं? राजा ने बात मान ली और फल में से एक टुकड़ा कुत्ते को खिलाया। कुत्ता तड़प-तड़प कर मर गया। राजा बहुत क्रोधित हुआ और अपनी तलवार से तोते का सिर धड़ से अलग कर दिया। राजा ने वह फल बाहर फेंक दिया। कुछ समय बाद उसी जगह पर एक पेड़ उगा। राजा ने सख्त हिदायत दी कि कोई भी इस पेड़ का फल ना खाएं क्योंकि राजा को लगता था कि यह अमृत फल विषाक्त होते हैं और तोते ने यही फल खिलाकर उसे मारने की कोशिश की थी। एक दिन एक बूढ़ा आदमी उस पेड़ के नीचे विश्राम कर रहा था। उसने एक फल खाया और वह जवान हो गया क्योंकि उस वृक्ष पर उगे हुए फल विषाक्त नहीं थे। जब इस बात का पता राजा को चला तो उसे बहुत ही पछतावा हुआ, उसे अपनी करनी पर लज्जा हुई।

तीसरे राजकुमार के मुख से ये कहानी सुनकर राजा बहुत ही खुश हुआ और तीसरे राजकुमार को सही उत्तराधिकारी समझते हुए उसे ही अपने राज्य का राजा चुना।

रायपुर-छ.ग.। महाशिवरात्रि पर आयोजित कार्यक्रम का शुभारम्भ करते हुए ब्र.कु. लता, ब्र.कु. आरती, नगरपालिका अध्यक्ष चन्द्रशेखर, जिला पंचायत अध्यक्ष डोमेश्वरी वर्मा तथा ब्रह्माकुमारी बहनें।

पन्ना-म.प्र.। अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस पर आयोजित कार्यक्रम में दीप प्रज्वलित करते हुए निशा जैन,प्रिन्सीपल,एक्सीलेंस स्कूल,पन्ना, अंजली श्रीवास्तव,स्पोर्ट्स टीचर,पन्ना, मंजूलता जैन,एडवोकेट, ब्र.कु. सीता,सेवाकेन्द्र संचालिका तथा अन्य महिलायें।

राजगढ़-म.प्र.। अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस पर 'महिलाओं का सर्वांगीण विकास' विषयक कार्यक्रम में दीप प्रज्वलित करते हुए पोस्ट मास्टर सीमा दुबे, आयुर्वेदिक डॉ. अर्चना सक्सेना, के.के. मेमोरियल स्कूल की डायरेक्टर चंद्रकांता उपाध्याय, शिक्षिका सृष्टि पांडे तथा जिला संचालिका ब्र.कु. मधु।

राजनांदगांव-छ.ग.। अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस पर आयोजित 'महिला जागृति आध्यात्मिक समागम' में दीप प्रज्वलित करते हुए जिला पंचायत अध्यक्षा गीता साहू, वसुंधरा फाउण्डेशन की अध्यक्ष वर्षा अग्रवाल, अधिवक्ता शारदा तिवारी, छ.ग. महिला आयोग की पूर्व सदस्य डॉ. रेखा मेश्राम, डॉ. साधना तिवारी, रत्ना ओसवाल, ब्र.कु. ममता,इंदौर, स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. पुष्पा तथा अन्य गणमान्य महिलायें।

जीरापुर-राजगढ़(म.प्र.)। महिला दिवस पर आयोजित 'अबला नहीं सबला है नारी' विषयक कार्यक्रम में शरीक हुए महिला बाल विकास परियोजना अधिकारी मंजू शर्मा, महिला बाल विकास सुपरवाइज़र अरुणा द्विवेदी, शिक्षिका ज्योत्सना दांगी, पटवारी समता गुप्ता, शिक्षिका आराधना शर्मा, राजगढ़ जिला संचालिका ब्र.कु. मधु तथा स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. नम्रता।

मुन्द्रा कच्छ-गुज.। अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस पर रोट्री क्लब में आयोजित कार्यक्रम में दीप प्रज्वलित करते हुए स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. सुशीला, डॉ. बरिया सर, डॉ. कंचन तथा अन्य।

OM - 4 - 2020 MAHARASHTRA FINAL_Page 1 and 2 16/05/2020 4:33 PM Page 10

परिवर्तन का मात्र एक आधार

लाइट का यहाँ अर्थ यह है कि ये ज्ञान, ये समझ, हमें जो मिली इसको सुनने के बाद हम कितने हल्के हुए। हमारा जितना-जितना हल्कापन होगा, उतना किसी कार्य को करने के बाद उस कार्य में शक्ति आयेगी। दुनिया की लाइट(बिजली) न हो तो फैन, कूलर, एसी बंद हो जाते हैं या कम हो तो भी नहीं चलता है, रुक जाता है। सभी कहते हैं कि आज लाइट ठीक से नहीं आ रही, इसीलिए ये कूलर नहीं चल रहा, एसी नहीं चल रहा। इसको चलाने के लिए हमको इतना लोड चाहिये तब जाकर ये एसी चलेगा। हम जब सुबह उठते हैं, उस समय हम परमात्मा से योग लगाते हैं तो हमारे अंदर की लाइट बढ़ जाती है, हम हल्के हो जाते, हमारा मन भी हल्का हो जाता, तन भी हल्का हो जाता है, अर्थात् लाइट हो जाता। लेकिन जैसे ही हम वहाँ से उठते हैं, दो तीन घंटे के बाद हमारी लाइट कट जाती है, और हम इनवर्टर पर आ जाते हैं। इनवर्टर पर आने के बाद न टीवी चलेगा, न एसी चलेगा, न कूलर चलेगा। वैसे ही जब लाइट हमारी कटती है तो हमारे शरीर के फंक्शन्स रुक जाते हैं और जो थोड़ी बहुत लाइट प्रीजर्व होती है हमारे ब्रेन में, उस ब्रेन के थ्रू हम थोड़ी देर अच्छा चलते हैं, इसका लाइव एक्ज़ाम्पल है जब हमको उबासी आनी शुरु हो जाए, इसका मतलब हमारी एनर्जी लॉ हो गई। उस समय हम इनवर्टर पर चल रहे हैं। लेकिन जैसे ही कोई हमें कोई काम दे दे या बहुत अर्जेंट काम करना हो जिसके बिना काम नहीं चलता हो तो हमारी एनर्जी बढ़ जाती है और हम चार्ज हो जाते हैं। लेकिन उस समय ऐसी कोई हलचल न हो, ऐसा कार्य न हो तो हम आलसी बनकर बैठे रहते हैं, शरीर भी भारी-भारी लगता है। इसीलिए हमको हमेशा कुछ एक्टिवनेस या क्रियेटिविटी(रचनात्मकता) चाहिए, जो हमारे ब्रेन को जागृत रखता है। इसीलिए परमात्मा ने हमको बीच-बीच में कहा कि आप हर घंटे में एक बार मेरे से कनेक्ट होकर फिर से अपने आप को चार्ज कर लो ताकि आपके अंदर बिजली आती रहे और आप लाइट फील करते रहो। अब ये लाइट इतनी ज़रूरी है कि जिस प्रकार अगर श्वास न चले तो शरीर खत्म हो जायेगा, वैसे ही अगर हम लाइट नहीं रहें तो हमारी शांति भंग हो जायेगी। इसलिए परिवर्तन की शक्ति लाने के लिए हमें शांति चाहिए और शांति के लिए लाइट होना बहुत ज़रूरी है। लाइट का ज्ञान परमात्मा ने दिया, समझ दी कि तुम शरीर नहीं आत्मा हो। आत्मा लाइट है। अगर आत्मा लाइट है तो वो चारों तरफ फैल जाती है।

यदि आत्मा लाइट है तो वो शांत है, यदि आत्मा लाइट है तो वो प्रेम स्वरूप है, यदि आत्मा लाइट है तो वो आनंद स्वरूप है, यही तो उसकी माइट है। तो ऐसी लाइट, ऐसी समझ हमें डेवलप करनी है, जिससे हमारे शरीर के ऊपर वो माइट दिखे, वो शांति दिखे, वो प्रेम दिखे, तो उन्हें लगे कि ये तो इस दुनिया से वैरागी हैं। ये दुनिया में हैं भी और नहीं भी। इनको लग रहा है दुनिया से कोई लेना-देना नहीं है। वो शांति, प्रेम, आनंद आपकी शक्ति बनेगी और आपको देखकर लोगों को परिवर्तन आने लग जायेगा। इसमें एक और गहरी बात है कि हम भी लाइट हैं और हमारा पिता निराकार शिव भी लाइट है और हमारा ज्ञान भी लाइट है। इसमें बताया गया कि आप शरीर निर्वाह अर्थ कुछ दिन यहाँ कार्य कर रहे हैं, जिसे सुनकर मन हल्का हो जाता है। और जितना मन हल्का होगा उतनी शांति की शक्ति चारों ओर फैलेगी और ये हम सबको ऑटोमेटिक पूरे विश्व में उन बातों के साथ जोड़ेगी जिन्हें जिस शक्ति की ज़रूरत होगी वो हमसे रिसीव करने लग जायेंगे। लेकिन पहले हम लाइट तो हों। परमात्मा के बच्चे यदि लाइट न हों तो कहाँ से शांति की शक्ति फैलायेंगे! उन्हें ही डर लग रहा है कि कहीं मैं मर गया तो, अरे हम तो पहले से ही मरे हुए हैं भाई! मरने की क्या बात है। तो यही एक मात्र आधार है अपनी लाइट को माइट बनाकर पूरे विश्व को परिवर्तन करने का। और इसके लिए सिर्फ जागृति की ज़रूरत है। ज्ञान हल्का है इसलिए आराम से दिया है, धीरे-धीरे दिया गया, बूंद-बूंद करके दिया गया। एकदम से नहीं उड़ेल दिया परमात्मा ने। जैसे एक बाल्टी पानी एक - शेष पेज 11 पर...

जैसे कम्प्यूटर चलता है, और उसको हम दैनिक कार्यों में इस्तेमाल करते हैं, लेकिन कम्प्यूटर को चलाने के लिए लाइट की ज़रूरत है। कम्प्यूटर माइट है, अब आप देखो माइट को भी चलाने के लिए यदि लाइट न हो तो ठप्प पड़ जायेगा। ऐसे ही हमें यदि किसी बात में भारीपन है तो हम उस कार्य में भी वही भारीपन फील करायेंगे या डाल देंगे। और जो भी उस कार्य को देखेगा उसको भी देखकर भारीपन महसूस होगा, क्योंकि जैसे बिजली के ट्रान्सफर्मर से जिस लोड (2 फेज़, 3 फेज़ या 1 फेज़) का कनेक्शन आता है वैसे ही हमारे घर में बिजली की सप्लाई होती है और उससे ज़्यादा से ज़्यादा मशीनें चल सकती हैं।

ब्र.कु.अनुज,दिल्ली

उपलब्ध पुस्तकें
जो आपके जीवन को बदल दें

मन की बातें

- राजयोगी ब्र.कु. सूर्य

प्रश्न : मेरा नाम श्रेया है और मैं ओम शांति को काफी समय से फॉलो कर रही हूँ और बहुत बदलाव भी आया है। जो शांति छिपी हुई थी मेरे अन्दर अब वो मैं महसूस करती हूँ। मेरा एक छोटा-सा प्रश्न है कुछ समय पहले आपने बताया था कि हम योग के माध्यम से अपने नक्षत्रों को भी ठीक कर सकते हैं। मेरे नक्षत्रों में राहू, सूर्य, मंगल के त्रिकोण बन रहे हैं जो मेरी आगे की एजुकेशन, जॉब, मेरी फैमिली पर बहुत भारी पड़ सकते हैं। मैं इन सबको ठीक करना चाहती हूँ। क्या राजयोग में इसका कोई प्रावधान है?

उत्तर : एक तो इन चीज़ों से बहुत ज़्यादा प्रभावित नहीं होना। और मैं तो आपको ये राय भी दूँगा कि ज्योतिषी में इनके छोटे-छोटे उपाय बता देते हैं। आपको किसी ज्योतिषी से भी मिलकर कोई उपाय कर लेना चाहिए। लेकिन जितना-जितना आपका योगाभ्यास बढ़ेगा और आप नौ ग्रह को साकाश देंगी, वायब्रेशन्स देंगी तो उनका प्रभाव रहेगा तो सही, लेकिन बहुत कम हो जायेगा। क्योंकि वो भी तो आखिर कोई चीज़ है ना, कोई शक्ति हैं और ये सूक्ष्म शक्तियां भी अगर हम उनसे बहुत फ्रैन्डली हो जायें तो वो भी हमसे फ्रैन्डली हो जाती हैं। प्रकृति को भी हम अपना गुड फ्रेंड बना सकते हैं। एक अच्छा संकल्प अपने को देना है कि मैं परमपवित्र आत्मा हूँ। और रोज़ प्रकृति को बार-बार ये संकल्प दें कि ये सब मेरे अच्छे दोस्त हैं। ये बैठकर ही करना होगा और ये महसूस करें कि ये तीनों देव रूप में मेरे सामने हैं। उनको गुड वायब्रेशन भी दें और ये मेरे गुड फ्रेंड है ये फीलिंग भी दें।

प्रश्न : मुझे हरवक्त मौत का भय रहता है जो बचपन से ही समाया हुआ है कि कहीं मेरी मृत्यु ना हो जाये और वही चीज़ मुझे स्वप्न में भी आ जाती है। और यदा-कदा वो मुझे डराती रहती है। ये मेरे सबकॉन्शयस माइंड में जैसे समा गई है। मैं राजयोग का अभ्यास भी करता हूँ लेकिन इस चीज़ से मैं बाहर नहीं निकल पा रहा हूँ। और इसी कारण मैं हाई बीपी और शुगर का भी पेशन्ट हो गया हूँ। एलोपैथ मेडिसिन मैंने ली है लेकिन उसका भी प्रभाव अब तक पड़ता हुआ दिखाई नहीं दे रहा है। कैसे इस मौत के भय को मैं अपने अन्दर से निकालूँ, कृपया बतायें?

उत्तर : मौत के भय की कोई मेडिसिन नहीं होती। इसके लिए मेडिसिन है आत्म जागृति। और ऐसा प्रतीत होता है कि पिछले किसी जन्म में या इससे पिछले 2-3 जन्मों में इसे मृत्यु ने बहुत कष्ट दिया है। वो भय सबकॉन्शयस माइंड में तब का भरा हुआ है। और वो इतना एक्टिव हो जाता है, किसी की भी मृत्यु देखता होगा ना, अब मृत्यु तो होती रहती है तो वो सब एक्टिव हो जाता है। ये बहुत अच्छी बात है कि आप राजयोग के पथ पर आ गये हैं इसलिए मैं कहूँगा कि ज़्यादा दिन नहीं बस 21 दिन एक अच्छी धुन लगा दें कि मैं आत्मा अजर, अमर, अविनाशी, बहुत पॉवरफुल हूँ, मेरी मृत्यु हो ही नहीं सकती। अपने इस स्वरूप को आप देखें। साथ में आपको अपने सबकॉन्शयस माइंड को क्लीन भी करना है। सुबह उठते ही जैसे आप योगयुक्त हों तो इस संकल्प को फिर से दोहराएं कि मृत्यु और कुछ नहीं, देह रूपी वस्त्र उतारने का नाम है। मैं ये देह रूपी वस्त्र खुशी-खुशी से, अपनी स्व-इच्छा से उतार दूँगा। मैं तो आत्मा हूँ, अजर, अमर, अविनाशी हूँ। जो आपके सबकॉन्शयस माइंड में छप गया है वो क्लीन होता रहेगा। साथ-साथ आप योगाभ्यास पर बहुत ध्यान दें। आपको ज्ञान में भी बहुत वृद्धि करनी चाहिए। हर रोज़ सेवाकेन्द्र पर जाना, परमात्मा के महावाक्य सुनना और वहाँ की सेवाओं में सहयोगी बनना, इससे वो चीज़ भूलती जायेगी और आपको लगेगा कि मृत्यु ऐसे कोई रोज़-रोज़ नहीं आनी है। आई थी और जब आयेगी तब तक के अपने जीवन को मुझे एन्जॉय करना है। संकल्प कर लें, अपने से बात करें कि ये मृत्यु कुछ नहीं है, ये तो देह परिवर्तन का नाम है। मृत्यु को मैं एन्जॉय करूँगा ये तो नैचुरल चीज़ है। और सुबह उठते ही और सोने से पहले मैं निर्भय हूँ ये सात-सात बार अवश्य कर लें तो ये भय आपके सबकॉन्शयस माइंड से निकल जायेगा।

प्रश्न : मैं पिछले दो साल से ज्ञान में हूँ। और अच्छा योग करती थी। कुछ दिनों से मेरा योग नहीं लग रहा है, और ना ही बाबा का ज्ञान अच्छा लग रहा है। मैं एक महान आत्मा हूँ 108 बार मैं लिखना भी चाहती हूँ, लिखती भी थी पर अब इसमें भी मेरी रूचि नहीं हो रही है। मैं मास्टर सर्वशक्तिवान हूँ ये भी कई बार रटती हूँ लेकिन फिर भी अच्छी फीलिंग नहीं हो रही है। मैं खुद को देखकर बहुत ज़्यादा परेशान हो रही हूँ ऐसा मेरे साथ क्यों हो रहा है, मैं समझ नहीं पा रही हूँ। कृप्या बताएं कि क्या करूँ?

उत्तर : कई बार मनुष्यों में सरटेन एज आने पर हार्मोन्स का परिवर्तन बहुत होता है। उससे ये देखा गया है युवकों की मनोस्थिति ऐसी बन जाती है बिल्कुल वो भाग जाना चाहते हैं। पढ़ाई में या किसी से उनको कहीं रूचि नहीं होती है। ज्ञान-योग जिसमें वो एक्सपर्ट थे वो फीका लगने लगता है, उससे भी वैराग आने लगता है। जीवन में सूखापन आने लगता है। ऐसे में उनके किसी साथी को उनकी मदद करनी चाहिए। देखिए ऐसे में मनुष्य खुद कुछ नहीं कर पाता है। ज़रूर ऐसे में अपने फ्रेंड होने चाहिए। जिससे ये बात हम शेयर भी कर सकें। और एक सुन्दर समाधान भी हमें मिल सके। पहला काम जो आपको करना है वो है पानी चार्ज करके पीना। सात बार संकल्प करें कि मैं मास्टर सर्वशक्तिवान हूँ, या अपनी माँ से मदद लें या आपका कोई फ्रेंड हो उसकी मदद लें। और आप रोज़ अपने ब्रेन को भी एनर्जी दें। और लिखने की बात जो है वो आप 108 बार ना लिखें, 21 बार लिखें बस। धीरे-धीरे फिर उसमें रूचि जागृत हो जायेगी। और अगर हो सके तो होम्योपैथी डॉक्टर से भी बात कर लें।

Contact e-mail - bksurya8@yahoo.com

मन की खुशी और सच्ची शांति के लिए देखें आपका अपना 'पीस ऑफ माइंड चैनल'

Peace of Mind
CABLE Network
Digital Cable
hathway SITI DEN GTPL FASTWAY UCN JioTV
TATA Sky 1065
airtel digital TV 678
videocon d2h 497
dish tv 1087

OM - 4 - 2020 MAHARASHTRA FINAL_Page 1 and 2 16/05/2020 4:33 PM Page 11

श्रेष्ठ मानव जीवन का आधार- 'सहयोग'

सहयोग देना एवं सहयोग लेना जीवन चक्र का विधान है। इस विधान के अनुरूप आत्मा एवं प्रकृति दोनों के परस्पर सहयोग से संसार में जीवन चक्र चलता है। नीति शास्त्रों में भी कहा गया है -

जातस्य नदी तीरे तस्यपि, तृणस्य जन्म साफल्यम्
यत् सलिल मज्जनाकुल, जन हस्तालंबनं भवति।

अर्थात् नदी किनारे जन्म लेने वाले तृण का जीवन सफल तब ही कहा जायेगा जब वह उस नदी प्रवाह में डूबने वाले व्याकुल मनुष्य के हाथ का सहारा बने क्योंकि डूबते हुए मनुष्य के लिए तिनके का सहारा ही जीवन बचाने का साधन बन जाता है।

इसी प्रकार वर्तमान समय विषय सागर में डूबे हुए मनुष्य को थोड़े से 'सहयोग' की आवश्यकता है। वह सहयोग न केवल उनके जीवन का कल्याण करेगा लेकिन इस दुःखी अशान्त संसार को परिवर्तन करने में भी मदद करेगा। मनुष्य का यह अमूल्य जीवन है ही दूसरों के सहयोग के लिए। दूसरों के कल्याण के लिए अपने संकल्प, बोल एवं कर्म का सहयोग देना ही सच्चा मानव धर्म है। एक दूसरे के सहयोग से मनुष्य शारीरिक, मानसिक, पारिवारिक एवं सामाजिक आदि सर्व समस्याओं का समाधान कर अपने जीवन को निर्विघ्न बना सकता है। अगर मानव सहयोग के इस महत्व को जान जीवन में आध्यात्मिक ज्योति प्रज्ज्वलित कर कर्म करें तो वह दुःख-अशान्ति, कलह-क्लेश वाली दुनिया को सदा के लिए सुख, शान्ति, आनन्द, प्रेम सम्पन्न, दैवी, सुखदाई संसार बना सकता है। जब-जब मानव धर्म-भ्रष्ट एवं कर्म-भ्रष्ट होकर मानवता की प्रगति में समस्या रूप बना है तब जिन आत्माओं ने अपने त्याग एवं बलिदान से समाज में आध्यात्मिक भावना, धार्मिक विचारधारा एवं नैतिकता के मूल्य बोध को सम्पूर्ण विलुप्त होने से बचाने में अपना सहयोग दिया, उन श्रेष्ठ धर्म-आत्माओं, महात्माओं को मानवता के इतिहास ने आज तक अपने विशाल दिल में अमरत्व का स्थान दिया है, उनसे विचारों में भिन्नता होते हुए भी सदा उनके सहयोग को याद कर अपने श्रद्धा-सुमन अर्पित करता है।

लेकिन मानव जीवन को सम्पूर्ण सुखी बनाने एवं दुःखी अशान्त संसार को सुखमय संसार बनाने में ईश्वरीय सत्ता का सहयोग अविस्मरणीय है। मानवता को धर्म एवं कर्म की शिक्षा देने वाली सर्व-शास्त्र-शिरोमणि गीता इसका यादगार है। मन्दिरों में शिवलिंग, भक्ति में स्मरण होने वाला 'ओम नमः शिवाय' मंत्र, हमें उस सत्य कल्याणकारी ईश्वर पिता की याद दिलाता है जो जड़जड़ीभूत अवस्था को प्राप्त होने वाले सच्चे सनातन मानवधर्म को पुनः नई दिशा देकर सर्व आत्माओं को अपने 'स्वधर्म' में स्थित कराता है तथा नैतिक एवं आध्यात्मिक ज्योति को पुनर्जागृत करने के लिए आत्माओं में ज्ञान घृत डालता है। श्रेष्ठ जीवन बनाने के लिए ज्ञान एवं शक्ति सहयोग देने के साथ-साथ वह स्वयं प्रत्यक्ष सेवाधारी बन सहयोग देकर सहयोग लेने की विधि सिखाता है। जिस विधि से यह पंकिल (कीचड़) समान दुनिया, पंकज (कमल) समान न्यारी, प्यारी, सुन्दर एवं सुखदायी स्वर्ग बन जाती है। समानता को सहयोग देने में मनुष्य की विशेषतायें एवं कलायें भी विशेष भूमिका निभाती हैं क्योंकि मनुष्य आदिकाल से कलाप्रिय रहा है। उस अनुरूप महान चित्रकार एवं विचित्र कलाकार परमात्मा ने भी हर मानव के अन्दर कोई न कोई विशेष गुण या विशेषतायें भर दी हैं। मनुष्य सृष्टि रूपी चैतन्य बगीचे में यह सब कलायें गीतकार, संगीतकार, चित्रकार, कवि, लेखक, साहित्यकार आदि अनेक प्रकार के रूप, रंग और सुगन्ध से अपनी-अपनी शोभा बढ़ाते हैं। कला के प्रति अभिरूचि होने के कारण इस माध्यम से मिले हुए हर सन्देश या शिक्षा को मनुष्य-मात्र अपने जीवन के साथ तुलना करता रहता है। इसलिए इन सब कलाओं द्वारा मानव के मन में आध्यात्मिक चेतना जागृत करना ही कलाओं द्वारा सहयोगी बनना है जिससे जीवन सुखमय बन जाता और दूसरों में छिपी हुई कलाओं को विकसित करने में सहायक बन जाता है। इसलिए अपनी कलाओं को ईश्वरीय सेवा में समर्पित कर सार्थक बनाने के साथ दूसरों के जीवन के अन्धकार को मिटाने के निमित्त बनो।

सहयोग देना एवं सहयोग लेना जीवन चक्र का विधान है। किसी भी प्रकार का सहयोग सार्थक तब होता है जब सहयोग देने वाले और सहयोग लेने वाले के साथ-साथ अन्य आत्माओं की भावनायें भी उसके प्रति शुभ हों। अतः विश्व-परिवर्तन तथा मानवता के कल्याण हेतु सदा अपनी शुभ भावना एवं शुभ कामनाओं के द्वारा सहयोगी बनो।

अगर हर एक आत्मा अपनी कला एवं विशेषताओं का सहयोग देवे तो आने वाला विश्व सर्व विशेषताओं पूर्ण, सर्वगुण सम्पन्न, और सर्व कलाओं से परिपूर्ण हो जायेगा जिसको 'सुखमय संसार' या 'सतयुग' कहते हैं।

सहयोग देने या लेने का आधार कोई ना कोई शक्ति होती है, जिस शक्ति के बिना सहयोग का अस्तित्व नहीं है क्योंकि व्यक्तिगत या समष्ठीगत जीवन में कर्म करने के लिए हमें किसी-न-किसी शक्ति की आवश्यकता होती है। यह शक्ति तन-मन-धन, मन्सा-वाचा-कर्मणा या समय-सम्बन्ध और सम्पर्क की हो सकती है। इन सभी शक्तियों के सहयोग की हमें जीवन के हर क्षेत्र में ज़रूरत पड़ती है। अपने प्रति या दूसरों के प्रति कार्य में सहायक बनने वाली, इन शक्तियों को स्व तथा अन्य के जीवन में श्रेष्ठता लाने के कार्य में लगाकर विश्व-परिवर्तन के कार्य में सहयोगी बनना अर्थात् शक्तियों में वृद्धि करना। "धन दिये धन ना खुटे" - ये ईश्वरीय विधान है। समय पर हम अगर अपनी इन शक्तियों से ईश्वरीय सेवा में सहयोगी बनते हैं तो आने वाले सुखमय संसार में हमें कंचन काया, निर्मल मन, अपार धन, प्रेम भर सम्बन्ध-सम्पर्क 21 जन्मों के लिए अधिकार के रूप में मिलता है। 'एक देना-लाख पाना'-इसीलिए तो गायन है। अतः अपनी सर्व शक्तियों सहित ईश्वरीय सेवा में सहयोगी बन श्रेष्ठ भाग्य को प्राप्त करो।

- ब्र.कु. जगदीशचन्द्र हसीजा

किसी भी प्रकार का सहयोग सार्थक तब होता है जब सहयोग देने वाले और सहयोग लेने वाले के साथ-साथ अन्य आत्माओं की भावनायें भी उसके प्रति शुभ हों। इसलिए शुभ भावना एवं शुभ कामना का सहयोग अनिवार्य है। अतः अन्य सर्व सहयोग के साथ-साथ सदा स्व प्रति तथा विश्व प्रति अपनी शुभ-भावना एवं शुभ-कामना का सहयोग देना ही मानवता को अपना महान सहयोग प्रदान करना है। स्थूल सहयोग न होने पर भी ये सहयोग कार्य करने वालों के प्रति वरदान या आशीर्वाद के रूप में सफलता दिलाता है। यह सूक्ष्म सहयोग वातावरण को शुद्ध बनाता है और दूसरों के मन में उमंग-उत्साह बढ़ाता है। समाज में एकता एवं संगठन में शक्ति भरने में शुभ भावना एवं कामना का सहयोग विशेष कार्य करता है, नहीं तो व्यक्ति विघ्न रूप बन जाता है। क्योंकि भावना अनुकूल संकल्प, और संकल्प प्रमाण कर्म होता है। अतः विश्व-परिवर्तन तथा मानवता के कल्याण हेतु सदा अपनी शुभ भावना एवं शुभ कामनाओं के द्वारा सहयोगी बनो। निःस्वार्थ भाव एवं निष्काम भावना ही शुभ-कामना एवं शुभ-भावना द्वारा सहयोगी बनने में मुख्य सहायक होती है।

परिवर्तन का मात्र.... - पेज 10 का शेष साथ सर पे डाल लो तो ऊपर-ऊपर का थोड़ा-सा बाल भीग जायेगा बाकी सब सूखा ही रहेगा। वैसे ही परमात्मा ने थोड़ा-थोड़ा ज्ञान दिया ताकि हमें समझ आये और हम हल्के होते जायें। उन्होंने हमें आत्मा का ज्ञान दिया, ड्रामा का ज्ञान दिया, कर्मों का ज्ञान दिया, हल्का करने के लिए तो दिया तो ये सब जानकर हल्के हो जाओ। इसलिए हे आत्माओं! अब हल्के बनकर शांति की शक्ति फैलाओ। ये शांति आपकी शक्ति बन जाये।

बहल-हरियाणा। महिला दिवस एवं होली मिलन समारोह में केक काटते हुए सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. शकुंतला तथा अन्य।

सारंगपुर-म.प्र.। अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस के कार्यक्रम में भावना वर्मा,पूर्व अध्यक्ष,लायन्स क्लब, ब्रजलता सोनी,अध्यक्ष,सोनी समाज महिला मंडल, रेखा शर्मा,वरिष्ठ समाजसेवी, नैंसी मैडम,क्रिश्चन समाज, मनमीत कौर छाबड़ा,अध्यक्षा,कांग्रेस महिला मंडल, जायदा बानो आदि गणमान्य महिलाओं को सम्मानित करने के पश्चात् समूह चित्र में उनके साथ ब्र.कु. लक्ष्मी तथा ब्र.कु. प्रीति।

तुमसर-महा.। त्रिमूर्ति शिवजयंती पर आयोजित कार्यक्रम का दीप प्रज्वलित कर शुभारम्भ करते हुए ब्र.कु. शक्ति, मराठा सेवा संघ अध्यक्ष चंद्रकांत लांजेवार, प्राध्यापक राहुल डोंगरे तथा समाजसेवी मीरा भट्ट।

खिलचीपुर-म.प्र.। 84वीं त्रिमूर्ति शिवजयंती पर शिवध्वजारोहण करते हुए जनपद अध्यक्ष जगदीश दांगी, ब्लॉक कांग्रेस अध्यक्ष सुरेन्द्र मेवाडे, लायंस क्लब अध्यक्ष शेख मोहम्मद राही, अभिभाषक संघ के अध्यक्ष लायन महेन्द्र सिंह खींची एडवोकेट, मेडतवाल समाज के अध्यक्ष राम गोपाल सिंगी, मेडतवाल समाज के अखिल भारतीय महामंत्री भंवर लाल सिंगी, लायन प्रदीप गुप्ता, अरविंद सक्सेना, गायत्री मंदिर पुजारी प्रेम नारायण, ब्र.कु. मधु, ब्र.कु. नीलू तथा अन्य भाई-बहनें।

दीव। अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस पर आयोजित कार्यक्रम के पश्चात् समूह चित्र में कलेक्टर सलोनी रिओ, जिला पंचायत उपाध्यक्षा अश्विनी भरत, एस.पी. की धर्मपत्नी तृप्ति हरेश्वर स्वामी, ब्र.कु. गीता, समाजसेवी विनय बेन शाह, एन.सी.सी. ऑफिसर वंदना कमालिया तथा जायन्ट्स ग्रुप।

महिलायें अपने में छिपी अभूतपूर्व शक्ति को पहचानें

» एक श्रेष्ठ समाज का आधार महिलाओं का सम्मान–राजेन्द्र गायकवाड़ «

अम्बिकापुर-छ.ग.। ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा विश्व भवन चोपड़ा पारा में अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस के अवसर पर आयोजित कार्यक्रम में अम्बिकापुर की डी.एफ.ओ. प्रभाकर खलको ने कहा कि नारी शक्ति स्वरूपा है। एक नारी में वो सारी शक्तियाँ मौजूद हैं, चाहे वो माँ हो, पत्नी हो, शिक्षक हो, या फिर उच्च या निम्न ओहदे पर विराजमान हो लेकिन एक उगते हुए सूरज की भांति दूसरे को भी अपनी शक्तियों से सिंचित करती है। सरगुजा की डी.पी.ओ. ज्योति मिंज,महिला एवं बाल विकास अधिकारी ने कहा कि प्रत्येक नारी अपने भीतर के देवत्व को समाज हित, एवं राष्ट्र हित के कार्य में लगाये। सरगुजा सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. विद्या दीदी ने कहा कि एक सशक्त समाज के लिए महिलाओं की भागीदारी महत्वपूर्ण है। नारी अपनी आन्तरिक शक्तियों को जगाकर दुनिया के बड़े-बड़े कार्य कर सकती हैं। समाज सशक्त तब होगा जब हमारे अन्दर अध्यात्म शक्ति होगी और अध्यात्म शक्ति से ही मानव जीवन में सन्तुष्टता और नैतिक मूल्य आते हैं जिससे ही राष्ट्र आगे बढ़ेगा। मातृ छाया की अध्यक्षा वन्दना दत्ता ने कहा कि नारी को हम देवी के रूप में देखें तो हर नारी इन ब्रह्माकुमारी बहनों जैसे समाज परिवर्तन से विश्व परिवर्तन की भूमिका निभा पायेगी। अम्बिकापुर के जेल अधीक्षक राजेन्द्र गायकवाड ने कहा कि महिलाओं में अभूतपूर्व शक्तियाँ होती हैं इसी कारण परमात्मा ने सृष्टि परिवर्तन के लिये स्थापित इस विद्यालय के संचालन के लिये भी महिलाओं को ही चुना। गायत्री परिवार से सुधा चौधरी ने कहा कि नारी के सशक्तिकरण से ही सारे समाज, सारे देश और खुद का विकास होगा।

कार्यक्रम में उपस्थित गायत्री परिवार, डॉ. मंजू शर्मा, डॉ. किरण अग्रवाल,स्त्री रोग विशेषज्ञ, सिक्ख समाज की अध्यक्षा,बीबी सुरजीत कौर, सिंधी समाज की अध्यक्षा,ज्योति पोपटानी अतिथियों ने भी अपने विचार व्यक्त किये।

कोरोना महामारी से बचाव के लिए कोरोना योद्धाओं के प्रति अभिवादन

अहमदाबाद। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी जी की अपील अनुसार ब्रह्माकुमारीज़ सेवाकेन्द्र 'सुख शान्ति भवन' द्वारा सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. नेहा बहन के साथ-साथ सेवाकेन्द्र के सभी समर्पित ब्र.कु. भाई-बहनों ने दीपज्योत जगाकर शुद्धता, शान्ति, शक्ति, निश्चय, निर्भय, सुरक्षितता, आरोग्य, उत्साह और एकता का संकल्प लेकर सबका तन प्रसन्न एवं रोग प्रतिकारक शक्ति से भरपूर रहे, ऐसी शुभ भावना के संकल्प किए। कोरोना महामारी के सामने हमारी विजय निश्चित है, इस प्रकार संकल्प करते हुए कि सभी को व्यक्तिगत स्वास्थ्य आरोग्य प्राप्त हो। सबका जीवन शान्तिपूर्ण, आनन्दपूर्ण बना रहे। समग्र भारत और विश्व के लोगों की सुखकारी के लिए महाज्योति परमपिता शिव परमात्मा के शक्तिशाली सकारात्मक संकल्पों को 9:00 मिनट तक विशेष कॉमेंट्री के साथ मन्सा सेवा के द्वारा विश्व में संकल्पों के प्रकम्पनों को फैलाया।

गुजरात मीडिया की संयुक्त संयोजिका ब्र.कु. नंदिनी ने बताया कि गुजरात ज़ोन मुख्यालय, कांकरिया,अहमदाबाद स्थित 'सुख शान्ति भवन' सेवाकेन्द्र में कुल 51 दीपमाला प्रज्वलित की गई और सभी ने सम्पूर्ण मौन रखा, ताकि सभी को मौन द्वारा शक्ति मिले।

प्रशासन के नियमों के प्रति किया जागरूक

नागपुर-महा.। लॉकडाउन के दौरान क्वारटाइन किए हुए भाई-बहनों के मनोबल को बढ़ाने हेतु विशेष रूप से प्रशासन द्वारा ब्रह्माकुमारीज़ की राजयोगिनी बहनों को आमंत्रित किया गया। ब्रह्माकुमारी बहनों ने मेडिटेशन का महत्व समझाया और उसे प्रतिदिन अपनाने को कहा। ताकि क्वारटाइन के समय अपने मन को नियंत्रित कर समय को सफल कर सकें। और प्रशासन द्वारा बताए गए नियमों का पालन करने हेतु भी जागरूक किया।

नारी सृष्टि कर्ता का विशेष उपहार

कोरबा-छ.ग.। ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस पर बहन रूकमणी नायर,वरिष्ठ समाज सेविका ने कहा कि मेरा तो यह मानना है कि एक दिन नहीं, हर दिन ही नारियों के लिये विशेष दिवस होता है। पचास कन्याओं का एक बालिका गृह है, जिसकी देखरेख मैं करती हूँ। इस बात का मुझे गर्व है कि मैं अपने प्रयास से उन्हें सुसंस्कारित कर पाऊं। रश्मि शर्मा,महासचिव,अखण्ड ब्राह्मण समाज,छ.ग. ने कहा कि माँ के बिना सुसंस्कारित परिवार व श्रेष्ठ समाज की कल्पना करना ही असम्भव है। ब्र.कु. बिन्दु ने कहा विश्व परिवर्तन में नारी शक्ति की एक अहम भूमिका है। उसके द्वारा ही परमात्मा विश्व परिवर्तन का कार्य करा रहा है। डॉ. के.सी. देबनाथ ने कहा कि राष्ट्र कवि रवीन्द्रनाथ टैगोर ने अपने साहित्य में वर्णन किया है कि नारी सृष्टि कर्ता का विशेष उपहार है। सृष्टि की सारी संवेदना उनमें समाई हुई है। अनीष शर्मा ने कहा कि कोरबा में नारी शक्ति ऊर्जावान और सशक्त है, लेकिन युवाओं को विशेष सशक्त बनाने की आवश्यकता है। ब्र.कु. रूकमणी दीदी ने कहा कि ब्रह्माकुमारी संस्थान में विशेष स्वयं परमपिता शिव परमात्मा ने विश्व परिवर्तन का कार्य करने हेतु नारी शक्ति के सिर पर ही ज्ञान कलश रखा और उन्हें सम्मान दिया। तब से ही आध्यात्मिक क्षेत्र में महिलायें आगे आईं और आज विश्व में शान्ति और शक्ति का ध्वज लहरा रही हैं। अनुभा सिंह,सहायक अभियंता सी.एस.पी.जी.सी.एल ने भी अपने विचार व्यक्त किये।

शान्तिवन तथा उसके आस-पास में किया छिड़काव

सैनिटाइज़ करके कोरोना से बचाव के लिए किया प्रेरित

शान्तिवन। कोरोना महामारी से बचाव के लिए ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान ने शान्तिवन तथा उसके आस-पास तलहटी तिराहे, आस-पास की दुकानों तथा सी.आई.टी. कॉलेज तक सैनिटाइज़र का छिड़काव किया। ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान के सफाई विभाग के ब्र.कु. जगदीश ने अपनी टीम के साथ दो टैंकर से छिड़काव किया।

इसके साथ ही परिसर में आने-जाने वाले वाहनों को भी सैनिटाइज़ किया जा रहा है। मनमोहिनीवन तथा आनन्द सरोवर के साथ श्रमिकों के रहने वाले स्थानों को भी सैनिटाइज़ किया जा रहा है। शान्तिवन से पुलिस थाने के बीच की दुकानों को भी छिड़काव कर सैनिटाइज़ किया जा रहा है।

ब्रह्माकुमारीज़ ने जिला प्रशासन को खाद्य सामग्री का सहयोग प्रदान किया

रायपुर-छ.ग.। ब्रह्माकुमारीज़ सेवाकेन्द्र शांति सरोवर द्वारा लॉकडाउन के दौरान गरीब और ज़रूरतमंद लोगों के लिए कलेक्टर एस.भारती दासन को 29 क्विंटल चावल, 3 क्विंटल गेहूं, 2 क्विंटल पोहा, 50 किलो दाल और 50 किलो शक्कर खाद्य सामग्री की गाड़ी को क्षेत्रीय निदेशिका ब्र.कु. कमला दीदी ने शिवध्वजारोहण दिखाकर रवाना किया। इस अवसर पर ब्र.कु. किरण, ब्र.कु. वनिशा भी मौजूद रहीं।

ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा कोरोना योद्धाओं को किया सम्मानित

सादाबाद-उ.प्र.। ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा कोरोना योद्धाओं प्रशासनिक अधिकारी, पुलिस, नगरपंचायत कर्मचारियों, पत्रकार बंधुओं को सम्मानित किया गया। इस अवसर पर उपजिलाधिकारी राकेश कुमार, सादाबाद नायब साहब संतोष कुमार, नगरपंचायत अध्यक्ष रविकांत अग्रवाल, उ.प्र. उद्योग व्यापार मंडल महामंत्री,ब्र.कु. वर्मा जी, कोतवाली कार्यालय पर पुलिस अधीक्षक योगेश कुमार उपस्थित रहे।

» ब्रह्माकुमारीज़ के द्वारा किया खाद्य सामग्री का वितरण

वाराणसी-उ.प्र.। देश में चल रहे कोरोना संकट के मद्देनज़र ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा ज़रूरतमंद लोगों को भोजन पहुँचाने का क्रम निरंतर जारी है। देश में आयी आपदा के समय जन सेवा में मुस्तैदी से खड़े पुलिस प्रशासन के माध्यम से ब्रह्माकुमारीज़ संस्था देश के विभिन्न स्थानों में मानवीय सेवाओं में संलग्न है। बनारस में भी लॉक डाउन के शुरुआत से ही जनसेवा में तत्पर ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा पिछले तीन चार दिनों से पुनः भूखे लोगों तक भोजन पहुँचाने हेतु बनारस के शासन-प्रशासन के कर्मठ जवानों के साथ सहयोग प्रदान किया जा रहा है। संस्था के ग्राम लमही में भी भोजन के पैकेट वितरित किए। संस्था के क्षेत्रीय कार्यालय की निर्देशिका राजयोगिनी ब्र.कु. सुरेन्द्र दीदी, प्रबन्धक ब्र.कु. दीपेन्द्र के निर्देशन में ये सेवायें जारी हैं।

ज़रूरतमंदों को वितरित किया जा रहा है भोजन

पानीपत-हरियाणा। ब्रह्माकुमारीज़ के ज्ञान मानसरोवर व पानीपत सर्कल के सेवाकेन्द्रों की ओर से लॉकडाउन के दौरान उस क्षेत्र के आस-पास 1000 गरीब व ज़रूरतमंदों को भोजन वितरण किया जा रहा है। और साथ-साथ लॉकडाउन के सोशल डिस्टेंस मेंटेन करने के नियमों का पालन करने हेतु भी जागृत किया जा रहा है। ये जानकारी ज्ञान मानसरोवर के निर्देशक ब्र.कु. भारत भूषण ने दी। इसके अतिरिक्त ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान की ओर से तन, मन,धन से भी सहयोग प्रदान किया जा रहा है।

राजकोट-मेहुलनगर(गुज.)। ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा लॉकडाउन के दौरान ज़रूरतमंद लोगों को फूड पैकेट वितरित करते हुए ब्र.कु. सुप्रिया व ब्र.कु. चेतना।

RNI NO RAJHN/2000/00721, POSTAL REGD. RJ/SIROHI/9623/18-20, Posting at Shantivan-307510 (Abu Road)
Licensed to post without prepayment RJ/WR/WPP/003/2018-20, Posting on 12TH TO 14TH and 22ND TO 24TH each month, published on 3rd May 2020
प्रकाशक एवं संपादक : गंगाधर नरसिंघानी, सह-संपादक : ब्र.कु. अनुज, डी.बी. प्रिंट कॉर्प. जयपुर से मुद्रित एवं ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय के लिए छपवाया। ई.मेल - omshantimedia@bkivv.org
कार्यालय : ओमशान्ति मीडिया, ब्रह्माकुमारीज़,शांतिवन, आबू रोड, (राज.) - 307510